RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव अमंत्रण

महा शिवरात्रि विशेष 2023

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण वर्ष:10, अंक:2 हिन्दी (मासिक), फरवरी-2023, पृष्ठ: 16, मूल्य: ₹ 12.50

दो दिवसीय प्रवास पर माउंट आबू पहुंचीं राष्ट्रपति, आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय सम्मेलन का किया उद्घाटन

शिव आमंत्रण, माउंट आबू/आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़

की सफलता यह सिद्ध करती है कि अवसर मिलने पर महिलाएं पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं: राष्ट्रपति

दो दिवसीय प्रवास पर माउंट आबू पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आध्यात्म और योग में रमीं रहीं। मंच से उन्होंने जिक्र भी किया कि आज जो भी हूं और जहां हूं सब परमात्मा और ब्रह्माकुमारी बहनों के आशीर्वाद से हूं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सफलता यह सिद्ध करती है कि अवसर मिलने पर महिलाएं पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। संस्थान में वरिष्ठ भाइयों द्वारा पीछे से सहयोग किया जाता है। युद्ध और कलह के वातावरण में विश्व समुदाय समाधान के लिए भारत की ओर देख रहा है। शांतिवन में आयोजित आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय सम्मेलन का दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया।

माउंट आबू में रात्रि विश्राम के बाद रोजाना की तरह अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे उठीं और 4.30 बजे तक राजयोग ध्यान किया। सुबह 7 बजे आध्यात्मिक सत्संग (मुरली क्लास) में पहुंचीं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर जो आध्यात्म शक्ति प्राप्त होती है उसका ज्वलंत उदाहरण यह है कि एक समय मैं स्वयं अंधकारमय जीवन की ओर अग्रसर हो गई थी। मेडिटेशन और ध्यान योग के माध्यम से मुख्य धारा में लौटी। विश्व में अनेकों संस्थान कार्यरत हैं, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसा संस्थान है जो बहनों द्वारा संचालित की जाती है। एक आध्यात्मिक संस्था के रूप में केवल ब्रह्माकुमारीज़ ही नहीं ऐसी कई संस्थाएं इस दिशा में आगे बढ़ रही हैं। आज यह संस्थान विश्व के 137 देशों में पांच हजार सेवाकेंद्रों का संचालन कर रही है। महिलाओं द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा संस्थान है।

ब्रह्मा बाबा ने नारी के ऊपर रखा ज्ञान कलश रखा

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि हमें कलियुग की मानसिकता को खत्म करना होगा और सतयुग की मानसिकता का आह्वान करना होगा। इसके लिए हम सबको मन में सत्वगुण को अपनाने का प्रयास करना होगा। मैं संस्थान के संस्थापक ब्रह्मा बाबा को नमन करती हूं और धन्यवाद देती हूं कि महिलाओं को पूरे विश्व में शांति और शक्ति प्रदान करने के लिए उनके सिर पर ज्ञान का कलश रखा है। ब्रह्मा बाबा ने जिस तरह महिलाओं को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाई, वैसे अन्य संस्थानों को भी प्रयास करना होगा। दया और करुणा की भावना भारतवासियों के जीवन मूल्यों में है। जीवन में मूल्यों के समावेश से ही भारत स्वर्णिम संस्कृति की ओर बढ़ेगा।

प्रत्येक मनुष्य शांति के लिए प्रयास कर रहा

राष्ट्रपति ने कहा कि इस धरती पर प्रत्येक मनुष्य मानसिक शांति के लिए प्रयास कर रहे हैं चाहे वो किसी देश, जाति, संप्रदाय के हों। शांति भी भोजन की तरह आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज़ शांति और आनंद के लिए मार्ग प्रशस्त कर रही है। आध्यात्म ही वो प्रकाशपुंज है जो पूरी मानवता को सही राह दिखा सकता है। मेरा मानना है कि अमृत काल में 2047 के स्वर्णिम भारत के लिए आगे बढ़ते हुए हमारे देश को विश्व शांति के लिए विज्ञान और आध्यात्म दोनों का उपयोग करना होगा। हमारा लक्ष्य है कि भारत एक नॉलेज सुपर पावर बने। हमारी आकांशा है कि इस नॉलेज का उपयोग सस्टेनेबल डवलवमेंट के लिए हो। सौहार्द्र, महिलाओं और वंचित वर्ग के उत्थान के लिए हो, युवाओं के विकास, विश्व में स्थाई शांति की स्थापना के लिए हो।

भारत शांति दूत की भूमिका निभा रहा है-

भारत इस समय जी -21 की अध्यक्षता कर रहा है, जिसकी थीम है वसुधैव कुटुम्बकम् यानी वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के साथ-साथ भारत शांति के अग्रदूत की भी भूमिका निभा रहा है। अपनी संस्कृति के आधार पर हमारा देश आध्यात्मिक और नैतिकता के निर्माण के लिए सक्रिय है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, आदि शंकराचार्य और संत कबीर की शिक्षाओं ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। माउंट आबू से जाकर बहनों ने पूरे विश्व में लोगों के अंदर विराजित शक्ति को पहचानने, सशक्त बनाने, ज्ञान देने और जागरुक करने का कार्य कर रही हैं।

बेटियां बनें शक्ति स्वरूपा : राष्ट्रपति

राष्ट्रपति मुर्मु ने देश में महिलाओं के खिलाफ हो रही घटनाओं पर चिंता जताते हुए कहा कि आज देश में बहनों और बेटियों के साथ जो घटनाएं हो रहीं ऐसे में उन्हें शक्ति स्वरूप बनकर आगे आना होगा। ब्रह्माकुमारी, बहनें-बेटियां लोगों के अंदर सतोगुण जागृत करने के लिए जागरूक करने का कार्य करें। ब्रह्माकुमारी बहनें लोगों में प्रेम, शांति और आत्मीयता को भरने और उनके अंदर विकारों को समाप्त करने का कार्य कर रही हैं। राजयोग से मेरा जीवन अंधकारमय से दूर हुआ।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार...

राजस्थान के संस्कृति मंत्री बीडी कलरा, सीएम के सलाहकार व सिरोही विधायक संयम लोढ़ा, पिंडवाड़ा- आबू रोड विधायक समाराम गरासिया, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, मीडिया निदेशक बीके करुणा, कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय मुख्य रुप से मौजूद रहे। संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी दीदी ने मुकुट और बैज पहनाकर राष्ट्रपति का सम्मान किया। जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। संचालन शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका ने किया।

परमात्मा का वरदानी हाथ सदा मेरे सिर पर है : मुर्मु

शिव आमंत्रण, माउंट आबू/राजस्थान।

दो दिवसीय प्रवास पर पहुंचीं राष्ट्रपति ने रात्रि विश्राम संस्थान के ज्ञान सरोवर अकादमी में किया। जहां उन्होंने अलसुबह ध्यान-साधना के बाद मुरली क्लास में कहा कि मेरे जीवन में कठिन परिस्थितियां आईं लेकिन कभी अकेला महसूस नहीं हुआ। मुझे ऐसा महसूस होता है मुश्किलों के दौर में परमात्मा मेरी मदद करता है। जीवन में उतार-चढ़ाव में परमात्मा ने कभी कमजोर महसूस नहीं पड़ने दिया। परमात्मा का वरदानी हाथ सदा मेरे सिर पर है। आज जो भी हूं सब परमात्मा का आशीर्वाद है। जब हम सबकुछ परमात्मा को सौंप देते हैं तो फिर वह हमारी चिंता करता है। कोई भी कार्य जब हम परमात्मा को साथी बनाकर करते हैं तो सफलता निश्चित है। मैंने बचपन से कभी खुद को कम नहीं आंका है। मेरा बेटियों के लिए संदेश है कि कभी खुद को कमजोर न समझें। खुद को कम न आंकें। आपमें सबकुछ करने की क्षमता है। कमजोर व्यक्ति कभी जीवन में बड़े लक्ष्य हासिल नहीं कर सकता है। मजबूत, बहादुर और आत्म विश्वास से भरपूर व्यक्तित्व की ही सभी जगह सराहना होती है और मान-सम्मान मिलता है।

ब्रह्मा बाबा की शिक्षाओं को पढ़ा-

राष्ट्रपति संस्थान के पांडव भवन परिसर पहुंचीं। जहां ब्रह्मा बाबा के समाधि स्थल शांति स्तंभ पर पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की। साथ ही समाधि पर लिखीं शिक्षाओं को उन्होंने पढ़ा और ध्यान लगाया। मेडिटेशन रूम, बाबा की कुटिया, बाबा के कमरे में पहुंचकर एकांत में कुछ देर शिव बाबा का ध्यान किया। हिस्ट्री हॉल में संस्थान के इतिहास को जाना। पांडव भवन में अवलोकन के बाद ज्ञान सरोवर में पौधारोपण किया। इस मौके पर ज्ञान सरोवर की निदेशिका बीके डॉ. निर्मला दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके शशि दीदी, बीके शीलू दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

रिट्रीट सेंटर का वर्चुअल शुभारंभ-

शांतिवन में सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति ने वर्चुअल रिमोट का बटन दबाकर उप्र के सिकंदराबाद में नवनिर्मित साइलेंस रिट्रीट सेंटर और मप्र के इंदौर में बन रहे शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर के ऑडियोरियम एवं शिवदर्शन आर्ट गैलरी का भी शुभारंभ किया और शुभकामनाएं दीं।

जगजाहिर है आध्यात्म के प्रति प्रेम

बता दें कि राष्ट्रपति मुर्मू का आध्यात्म के प्रति प्रेम और लगन जगजाहिर है। वह वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्मिक प्रवचन सुनती हैं और रोजाना सत्संग करती हैं। संस्थान के विश्वभर में स्थित सभी सेवाकेंद्र पर एक साथ, एक ही समय पर सुबह 7 बजे से ईश्वरीय महावाक्यों पर सत्संग होता है। इसमें परमात्मा की ओर से शिक्षाएं, सावधानियां और मार्गदर्शन मिलता है। राष्ट्रपति मुर्मू की दिनचर्या आज भी अलसुबह 3.30 बजे से शुरू हो जाती है। सबसे पहले वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती हैं, जिन्हें सभी प्यार से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े सभी भाई-बहन शिव बाबा कहते हैं। शिवलिंग के आकार की लाल लाइट के बिंदू पर वह अपना ध्यान लगाती हैं। वह शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक भी यथा संभव समय होने पर राजयोग मेडिटेशन करती हैं।

राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर बोले-

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व परिवर्तन के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही है

हरियाणा के मुख्यमंत्री पहुंचे ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में लिया भाग

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

सिर्फ भौतिक विकास को हम विकास नहीं कहेंगे। इसके साथ-साथ हमें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर देना होगा। भौतिक विकास का सुख चाहिए तो आध्यात्मिक विकास जरूरी है। मनुष्य में संस्कार निर्माण कैसे हो, आध्यात्मिक स्तर कैसे ऊंचा उठाया जाए इस पर ध्यान देना होगा। जो समाज में नशाखोरी, गलत आदतें, तनाव जैसी व्याधियां हैं उसे कैसे समाप्त किया जाए इस पर हमें आगे आकर कार्य करना होगा। इस कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और बहनें लगी हुई हैं।

उक्त उद्गार हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने व्यक्त किए। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का। उन्होंने संस्थान के पीएम पार्क के लिए 21 लाख रुपये दान देने की भी घोषणा की। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन विषय पर उन्होंने कहा कि सभी संत-महात्माओं के एक ही विचार होते हैं कि समाज को सुंदर कैसे बनाया जाए। उनकी भाषा, तरीका अलग-अलग हो सकता है। संत-महात्माओं के विचारों को समाज तक पहुंचाने के लिए हरियाणा सरकार ने योजना बनाई है। इसके तहत सरकारी स्तर पर उनकी जयंती मनाते हैं।

उन्होंने कहा कि कभी भी अपने अंदर निराशा नहीं लगने दें। हमेशा आशावादी बनकर आगे बढ़ना है। माना कि अंधेरा घना है पर दीप जलाना कहां मना है। इस नाते से हम एक-एक दीप जलाते जाएं और आगे बढ़ते जाएं। प्रधानमंत्री ने यूएनओ में भारत की ओर से प्रस्ताव रखा है कि वर्ष 2023 को मिलिट इयर (मोटा अनाज) मनाया जाए। ताकि मोटे अनाज को लोग खाने में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

मुख्यमंत्री ने संस्थान के पीएम पार्क के लिए 21 लाख रुपये दान की घोषणा की

स्वर्ग और नर्क दोनों यहीं हैं: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने कहा कि सृष्टि अच्छाई-बुराई और दैवी शक्तियां व आसुरी शक्तियां दोनों साथ-साथ चलती रहीं हैं। लेकिन प्रबुद्धजन, महापुरुषों ने दैवी शक्तियों को आगे बढ़ाने की भूमिका निभाई है। श्रेष्ठ विचार को आगे बढ़ाने का प्रयत्न रहा है। जब दैवी शक्तियों की रेखा लंबी हो गई तो समाज के अंदर एक सुख का अनुभव करने लगे तो लोगों ने उसे स्वर्ग का नाम दे दिया। जब कभी आसुरी शक्तियां अपनी रेखा लंबी कर लेती हैं तो समाज में पीड़ा, दु:ख पनपने लगता है उसे नर्क का नाम दे दिया। स्वर्ग और नर्क दोनों यहीं हैं। अंतर बस इतना है कि किस समय कौन सी शक्तियां प्रभावी हैं, कौन सी रेखा लंबी है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एक लक्ष्य को लेकर आध्यात्मिकता के माध्यम से इस रेखा को लंबा कर रहे हैं। यही वास्तव में हमें आगे चलकर के इसका प्रभाव बढ़ेगा तो समाज सुखी होगा। फिर से हम जिस स्वर्ग की कल्पना कर रहे हैं वह आने वाला है।

मिशन के रूप में कर रहे कार्य: सांसद

हरियाणा करनाल के सांसद संजय भाटिया ने कहा कि पानीपत में वर्ष 1983 में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ का पहला सेंटर खुला। आज वहां से 55 सेंटर खुल चुके हैं। आज ब्रह्माकुमार भाई-बहनें मिशन के रुप में समाजसेवा में लगे हुए हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता में प्योरिटी की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय, पानीपत के डायरेक्टर बीके भारत भूषण ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन पानीपत की बीके शिवानी ने किया। आभार बीके मेहरचंद ने किया। दादी कॉटेज पहुंचे मुख्यमंत्री का मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने शॉल और स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया।

गीता का एक श्लोक पढ़कर मैंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया

मुख्यमंत्री ने कहा कि कहीं से मुझे गीता के एक श्लोक कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन अर्थात् कर्म करते चलो, फल की इच्छा मत करो पढ़ने को मिल गया। वर्ष 1977 में 45 साल पहले इस एक पंक्ति को पकड़कर मैंने अपना जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। मैंने हरियाणा के पौने तीन करोड़ जनता को अपना परिवार माना है। हमने आध्यात्मिकता के आधार पर कहा है कि वसुधैव कुटुम्बकम्। लेकिन मैंने कर्म के नाते पूरे हरियाणा को अपना परिवार माना है। हरियाणा सरकार ने शिक्षा में गीता के उपदेशों और जीवन जीने की कला की बातों को शामिल किया है, जिसे आज देश ही नहीं दुनिया भी स्वीकार कर रही है। अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती के कार्यक्रमों को सरकार की ओर से जिला स्तर पर आयोजित कराए गए हैं। जरुरतमंद लोग हैं, गरीब लोग हैं उनके विचार बदलने के लिए प्रयास करें।

800 लोगों के रहने की रहेगी व्यवस्था, पांच हजार लोगों की क्षमता का ओपन ऑडिटोरियम भी बनेगा

ऑडिटोरियम का शुभारंभ करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है: राष्ट्रपति

सद्भावना ऑडिटोरियम और शिव दर्शन आर्ट गैलरी का राष्ट्रपति ने किया वर्चुअल शुभारंभ

शिव आमंत्रण। इंदौर, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मध्यप्रदेश के पहले शिव शक्ति रिट्रीट सेंटर के सद्भावना ऑडिटोरियम और शिव दर्शन आर्ट गैलरी का राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने वर्चुअल शुभारंभ। राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि आज मुझे इस ऑडिटोरियम का शुभारंभ करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि इस रिट्रीट सेंटर से अनेकों लोगों को जीवन में सुख-शांति और आध्यात्म की नई राह मिलेगी। लोगों के जीवन में शांति और शक्ति भरने का यह केंद्र बनेगा। लोग शांति और सुकून की तलाश में यहां आकर कुछ पल बिता सकेंगे।

रिट्रीट सेंटर पर आयोजित कार्यक्रम में इंदौर सांसद शंकर लालवानी ने कहा यह रिट्रीट सेंटर क्षेत्र में एक नई किरण लेकर आया है। इसके बनने से यहां लाखों लोगों को लाभ मिलेगा। मेरा सौभाग्य है जो मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान से कई वर्षों से जुड़ा हुआ हूं। यहां से मैंने एक बात सीखी है सामने वाले की बात को बहुत धैर्यता से सुनें। हम दुखी रहेंगे तो हमारे कारण दूसरे भी दुखी होंगे। दूसरों को सुख

देने की कला हम ऐसे स्थान पर जाकर ही सीखते हैं। इन सेवाकेंद्रों के माध्यम से अच्छे व्यक्ति और व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है।

संगठन समाज में मां की भूमिका निभा रहा

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष हर्ष चौहान ने कहा कि आज मेरे लिए सौभाग्य की बात है पहली बार ब्रह्माकुमारी के कार्यक्रम में पधारा। जब मैं स्कूल में था तो मेरे शिक्षक बार-बार एक बात बोलते थे कि महिलाएं पुरुषों से श्रेष्ठ हैं। ब्रह्माकुमारी संगठन मां की भूमिका समाज में निभा रहा है।

कई लोगों ने बताया कि इस संगठन में आने के बाद कैसे उन्होंने अपनी परेशानी दूर की। इंदौर जोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आरती दीदी ने कहा कि परमपिता परमात्मा को याद करने से जो शक्तियां मिलती हैं इससे जीवन में सहज परिवर्तन होता है। आज मनुष्य में काम क्रोध, लोभ, मोह अहंकार आदि विकारों की प्रवेशता है, जिससे मनुष्य कुकर्म करता है। परंतु परमात्मा द्वारा सिखाए राजयोग से हम अपने मन को शांत कर सकते हैं एवं श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सीख सकते हैं। इस मौके पर बड़ी संख्या में आसपास के गांवों के लोग और इंदौर से पहुंचे भाई-बहनें मौजूद रहे।

जानकी दादी ने रखी थी सेंटर की नींव-

बीके रेवती दीदी ने बताया कि शिव शक्ति रिट्रीट सेंटर की नींव वर्ष 2019 में संस्थान की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने रखी थी। यह संस्थान प्रदेश का पहला रिट्रीट सेंटर है, जहां संपूर्ण निर्माण कार्य होने के बाद एक साथ 800 लोगों के रहने की व्यवस्था रहेगी। सद्भावना ऑडिटोरियम में एक साथ दो हजार लोग बैठकर कार्यक्रमों का लाभ ले सकेंगे।

राष्ट्रपति ने रिट्रीट सेंटर में बनीं शिव दर्शन आर्ट गैलरी का भी शुभारंभ किया। रिट्रीट सेंटर में बन रहे ओपन ऑडिटोरियम में एक साथ पांच हजार लोग बैठ सकेंगे। इसमें मेगा इवेंट आयोजित किए जाएंगे। साथ ही समय प्रति समय यहां आध्यात्मिक उत्थान के कार्यक्रम और सत्संग भी होंगे। यहां पिछले एक साल से आसपास के ग्रामवासियों और शहरवासियों के लिए निःशुल्क राजयोग मेडिटेशन का कोर्स शुरू किया गया है।

'शिव' संगिनीं बनीं 21 बेटियां

जयपुर में ऐतिहासिक अलौकिक समर्पण समारोह : 7000 लोग बने साक्षी, माता-पिता के खुशी में छलके आंसू

बहनें बोलीं- कुछ अलग करने की चाह थी, स्वामी विवेकानंद से मिली प्रेरणा

मेरा बचपन से ही संकल्प था कि संसार से कुछ अलग करना है। मुझे शादी नहीं करनी है। सीएस फाइनल के पेपर के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई। मुझे यहां की पवित्रता ने बहुत आकर्षित किया। मैं पवित्रता की शक्ति को विश्व कल्याण के कार्य में लगाना चाहती हूं। आज के युवाओं को हम देखते हैं कि वह अपना जीवन विषय विकार में ही खराब कर रहे हैं इसलिए मैं अपना जीवन समर्पित किया है।

- बीके राखी (29), एमकॉम, सीएस एक्जीक्यूटिव, सोडाला, जयपुर

ब्रह्माकुमारी दीदियों की सादगी और पवित्रता ने आकर्षित किया। जब मैं सेंटर से जुड़ी तो योग में लाइट का साक्षात्कार हुआ। ऐसा लगा जैसे वह मुझे बुला रही है। इस पर मैंने सेंटर पर रहने का संकल्प किया। साथ ही मेरा संकल्प था कि मुझे सरकारी जॉब करनी है तो वह भी पूरा हो गया। रिश्तेदार परिजन शादी के लिए दबाव बना रहे थे लेकिन जब वह सेंटर आए और मुझसे सवाल किए तो उत्तर सुनकर वह भी संतुष्ट हो गए और ब्रह्माकुमारी बनने की लिए अपनी सहमति दे दी।

-बीके सुनीता (33), कॉलेज शिक्षिका, एमएससी, बीएड, इंद्रा गांधीनगर, जयपुर

स्वामी विवेकानंद की एक किताब पढ़ने के बाद संकल्प किया कि मुझे ब्रह्मचारी बनना है। समाज-देश के लिए कुछ करना है। अनेक एनजीओ के साथ समाजसेवा भी की। बैडमिंटन में नेशनल लेवल तक खेला। सबकुछ करते भी मन संतुष्ट नहीं था। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद पता चला स्वयं भगवान आकर इस भ्रष्टाचारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। फिर मैंने जीवन समर्पित करने का निश्चय किया।

- बीके पूजा (26), बीएससी, सोडाला, जयपुर

मैं बचपन से ही शिव की भक्ति करती थी। दिल की हर बात उनके साथ शेयर करती थी। कोई भी समस्या आए तो उन्हें सुनाती और समाधान भी मिल जाता था। बीच में कुछ परिस्थितियों के कारण मैं नास्तिक बन गई। फिर ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई और राजयोग के कोर्स के बाद मेरे सभी सवालों के जवाब मिल गए। फिर माता-पिता की सहमति से अपना जीवन समर्पित करने का फैसला किया।

-बीके किरण (29) बीए, राजापार्क, जयपुर

शिव आमंत्रण, राजापार्क/जयपुर।

सीएस, एमकॉम, बीए, बीएससी और शिक्षक बनने के बाद 21 बेटियों ने आध्यात्म की राह अपनाते हुए अपना जीवन विश्व कल्याण के लिए अर्पित कर दिया। बेटियों ने जब परमात्मा शिव को अपना जीवन साथी मानते हुए वरमाला पहनाईं तो यह दृश्य देखकर माता-पिता सहित मौजूद लोगों की आंखें खुशी से नम हो गईं। हर कोई इनके त्याग-साहस और समर्पण की महिमा करता दिखा।

ब्रह्माकुमारीज़ के राजापार्क जयपुर सबजोन की ओर से 21 कन्याओं का अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह आयोजित किया गया। इसमें राजस्थान समाज कल्याण विभाग की अध्यक्षा राज्यमंत्री डॉ. अर्चना शर्मा ने कहा कि जो आध्यात्म से जुड़ते हैं, वह सांसारिक जीवन की दुविधाओं से बाहर हो जाते हैं। राजनीति में नेता भी सफेद कपड़े पहनते हैं, लेकिन आप जो सफेद वस्त्र धारण करते हैं उनमें और आप में बहुत अंतर है। यही कारण है आपकी विश्वसनीयता इस सांसारिक जीवन में बहुत बड़ी है।

दिल्ली शक्ति नगर सबजोन इंचार्ज एवं रशिया सेवाकेंद्रों की डायरेक्टर राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने कहा कि अपना जीवन प्रभु अर्पित करना बड़ा कार्य है। जयपुर सबजोन प्रभारी राजयोगिनी बीके पूनम दीदी ने बताया कि बाल अवस्था में कन्याएं श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त होकर ब्रह्माकुमारी की शिक्षाओं का पालन कर रही हैं। यह ब्रह्माकुमारी बहनें अपनी शिक्षा पूर्ण कर ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नियमों के पालन करते हुए माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त कर समाज कल्याण के लिए अथक रूप से अपना योगदान दे रही हैं। इस दौरान कमल सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके निर्मला दीदी, जोधपुर सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके फूल, बीके शील ने भी विचार व्यक्त किए। बाड़मेर से इंटरनेशनल आर्टिस्ट स्वरूप पंवार, बीके युगरतन व अन्य कलाकारों ने दिव्य नृत्य, गीत नृत्य नाटिका एवं अन्य रंगारंग प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सात हजार से अधिक लोग साक्षी बने।

यहां का पवित्र जीवन मुझे बहुत अच्छा लगता था और बचपन से ही समाजसेवा की इच्छा थी, इसलिए ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प लिया। आज लोगों की मदद करके खुशी मिलती है।

- बीके खुशी (32), बीए, बीएड, निर्माण नगर, जयपुर

भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा के कार्य में जीवन समर्पित करने का सौभाग्य मिला। कन्या वह जो 21 कुल का उद्धार करें। मुझे लगता है कि ब्रह्माकुमारी से अच्छी कोई लाइफ नहीं।

- बीके अंजू (30), 12वीं, परबतसर, नागौर

मुझे बचपन से ही बहुत क्रोध आता था इतना कि मैं बेहोश हो जाती थी। हाथ-पैर ठंडे हो जाते थे। राजयोग मेडिटेशन से गुस्सा शांत हो गया और मैं नॉर्मल हो गई। इसके बाद ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प किया।

-बीके कमला (33) बीए, जगतपुरा, जयपुर

जब मैं 9वीं क्लास में थी उसी समय से ही मेरे पिताजी एसपी थे। जब वह ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए और उनके जीवन में परिवर्तन हुआ तो मुझे सेंटर ले गए। धीरे-धीरे मेरा आध्यात्म की ओर रुझान बढ़ता गया।

- बीके गुलाब (33) बीए, मोडल टाउन, जयपुर

बाल्यकाल से ही मन में प्रश्न था कि संसार का चक्र क्या है। संसार में लोगों के बीच प्रेम क्यों नहीं है, आपस में लड़ते-झगड़ते क्यों हैं। लेकिन ब्रह्माकुमारी आश्रम में आने के बाद सभी के जवाब मिल गए।

- बीके गायत्री (30) एमकॉम, बगरु, जयपुर

ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने पर युग परिवर्तन का पता चला कि परमात्मा सृष्टि के परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं तो मैंने संकल्प किया कि मुझे भी इस कार्य में परमात्मा का सहयोगी बनना है। परमात्मा का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है।

- बीके कला (30) बीए, दुर्गापुरा, जयपुर

मैंने ब्रह्माकुमारी जीवन इसीलिए चुना कि इस संसार में चारों ओर दुःख है और स्वयं भगवान आकर के हमें पवित्र बना कर इस संसार को परिवर्तन का कार्य कर रहा है तो मुझे यह जीवन बहुत अच्छा लगा और ऐसी सेवा में मैंने अपना जीवन समर्पित करने का लक्ष्य लिया।

-बीके हीना (33), बीए,लाम्बाहरिसिंह, टोंक

बचपन से बहुत भक्ति करती थी और मुझे आशा थी कि भगवान मिलेंगे। जब गांव में दीदियां सात दिन का राजयोग कोर्स कराने आईं तो कोर्स के दौरान ही मुझे निश्चय हो गया कि भगवान इस धरा पर आ गए हैं।

- बीके ज्योति (35) 8वीं, वाटिका, जयपुर

जब भी सेंटर पर जाती थी तो दीदियों का पवित्र जीवन बहुत अच्छा लगता था। इस पर मैंने भी संकल्प किया कि मुझे भी अपना जीवन ऐसा बनाना है। मुझे समाज के लिए कुछ करना है। विश्वकल्याण के लिए अपना जीवन देना है।

- बीके मनीषा (28) दसवीं, मदरामपुरा, जयपुर

परमात्मा इस सृष्टि पर आकर इतना श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं तो हमें यह सौभाग्य मिल रहा है कि अपना जीवन समर्पित करना ही चाहिए। ब्रह्माकुमारी जीवन से बढ़कर इस दुनिया में कोई जीवन नहीं है। मैंने अपने विवेक से ब्रह्माकुमारी बनकर समाज कल्याण का फैसला लिया।

- बीके रेखा (25), बीए, परबतसर, नागौर

पढ़ाई के दौरान मुझे लगा कि डिप्रेशन मैं जा रही हूं। सुबह कुछ याद नहीं रहता था। राजयोग ध्यान के अभ्यास से मैं डिप्रेशन से बाहर आई और याददाश्त बढ़ गई। साथ ही अस्थमा की बीमारी ठीक हो गई।

- बीके दीक्षा (29), एमकॉम, सांगानेर, जयपुर

जब मैं ब्रह्माकुमारीज़के संपर्क में आई तो परिवार वाले विरोध करते थे लेकिन आज मेरा जीवन देखकर उन्हें बहुत खुशी होती है। वह गर्व के साथ बताते हैं कि मेरी बेटी ब्रह्माकुमारी है।

- बीके जया (36), दसवीं, सूर्यनगर तारों की कुंट, जयपुर

ब्रह्माकुमारी लाइफ बहुत अच्छी लाइफ है। जिसमें हम खुद के साथ दूसरों का भी जीवन बना सकते हैं उन्हें सुख-शांति की राह दिखा सकते हैं। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने मुझे इस योग्य समझा।

- बीके लक्ष्मी (32), 12वीं, मॉडल टाउन, जयपुर

मेरे ताऊ के लड़के ने ब्रह्माकुमारी के बारे में बताया। यहां ज्ञान सुनकर मैंने संकल्प किया कि अब मुझे भी अपना जीवन ऐसा बनाना है। उसी दिन से मैंने प्याज-लहसुन छोड़ दिया और राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने लगी।

- बीके सुनीता (55), राजापार्क जयपुर

बचपन से ही सेंटर पर आना-जाना रहा। यहां दीदियों का पवित्र जीवन, सफेद वेशभूषा, स्नेह-प्यार अपनी ओर खींचता था। इस पर मैंने जीवन प्रभु को समर्पित किया और विश्व कल्याण के लिए सेवारत हूं।

- बीके सीमा (30), बीएससी (आईटी), मालवीय नगर, जयपुर

यहां की सच्चाई-सफाई और पवित्र जीवन सदा ही मुझे प्रभावित करता रहा है। इसीलिए मैंने ब्रह्माकुमारी जीवन चुना। घर वालों की ओर से जीवन में कई परीक्षाएं आईं लेकिन परमात्मा ने सब दूर कर दिया।

- बीके सुशीला (35), आठवीं, इंदिरा गांधीनगर, जयपुर

जब मैं संस्था के संपर्क में आई तो सुबह 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त में ऐसा लगता था जैसे मुझे कोई आवाज देकर उठा रहा है। मेरे नाम से मुझे बुला रहा है। मैं देखती तो कोई दिखाई नहीं देता। इस पर योग में कई अनुभूतियां होने लगीं। यह देखकर आध्यात्म की राह चुनी।

- बीके आभा (30), संस्कृत में शास्त्रीय आचार्य, सांगानेर, जयपुर

रियल लाइफ

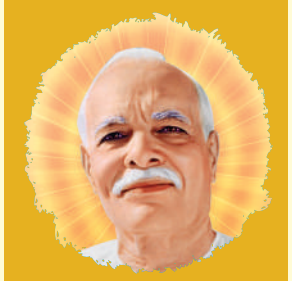

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू, राज.

आप शक्तियों का काम है आत्माओं को जगाना

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ऐसी निराली अवस्था में जब हम ब्रह्माकुमारियां यज्ञ कुंड से निकलकर लोक-सेवार्थ गईं तो समझा जा सकता है कि हमें यह संसार कैसा लगा होगा। जब हमें लोग कहते कि हम विकारों को जीत ही नहीं सकते तो हमें उन पर बड़ा आश्चर्य होता था, क्योंकि हम पर बाबा ने ऐसी ज्ञान वर्षा की थी कि हमारा तो सहज स्वभाव ही निर्मल हो गया था।

अपनी पहली रेल यात्रा के बारे में ब्रह्माकुमारी गंगा लिखती हैं कि रेल में बैठे हुए भी हमें अपने यज्ञ की याद आती रही और बाबा की ओर हमारा मन खिंचा रहा। आखिर मन को हमने जैसे-तैसे अपने काबू में करके पास बैठी दूसरी माताओं को ईश्वरीय ज्ञान सुनाना प्रारंभ किया। उन लोगों को इससे बहुत ही शान्ति का अनुभव हुआ और वे हमें अपने यहां के लिए निमंत्रण भी देने लगीं। उन पर इस ज्ञान का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। तब हमें बाबा के ये महावाक्य याद आए कि बच्ची- जब आप यह ईश्वरीय ज्ञान लोगों को सुनाओगी तो उन्हें बहुत खुशी होगी और आपका बहुत प्रभाव निकलेगा।

हम जब बृज कोठी में बाबा से विदा ले रही थीं तो बाबा ने हमें अलौकिक स्नेह से युक्त दृष्टि से निहारते हुए कहा था

बच्ची, जाओ! आप शक्तियों का काम ही है सभी आत्माओं को जगाना। खूब सर्विस करो। एक दिन आएगा कि तुम्हारी ज्ञान धारणा का चमत्कार देखकर और पवित्र जीवन देखकर लोग तुम्हारी जय-जयकार करेंगे। अब वही महावाक्य साकार हो रहे थे।

हम मनोहर इन्द्रा बहनजी के लौकिक संबंधियों के यहां पहुंचीं जिन्होंने कि हमें निमन्त्रण पत्र में यह लिखकर भेजा था कि -आप आकर अपने 14 वर्ष की तपस्या से और आध्यात्मिक अनुभवों से हमें भी जगाओ तथा ज्ञानामृत पिलाओ। हमने उन्हें यह तो सूचना दे ही दी थी कि हम लोग प्रातः बहुत जल्दी उठती हैं और स्नान करके ईश्वरीय स्मृति में लवलीन होती हैं, अतः हमारे लिए एक अलग कमरा चाहिएगा। हमने उन्हें यह भी बताया हुआ था कि हम अपने ही हाथों से अपना भोजन बनाती हैं और हम कोई भी अशुद्ध अथवा तामसिक भोजन नहीं लेतीं, इसलिए हमारे यहां रहने पर घर में प्याज आदि तामसिक पदार्थों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने उचित व्यवस्था कर दी थी।

अतः जब हम उनके यहां जाकर ठहरीं तब हम ईश्वरीय नियमों के अनुसार ही रहती थीं। हम उन्हें भी ईश्वरीय याद में स्थित होकर भोजन बनाने और भोग लगाकर भोजन खाने की प्रेरणा देती थीं। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान भी हम नित्यप्रति सुनातीं और पवित्रता का मार्ग भी दर्शाती थीं। उन पर हमारे जीवन का काफी प्रभाव पड़ा परन्तु वे इस भ्रम में पड़े हुए थे कि गृहस्थ और व्यापार करते हुए उन नियमों का पालन करना कठिन है।

पंडित जवाहरलाल नेहरु और इंदिरा गांधी से भेंट-

जब हम देहली में उनके यहां ठहरी हुई थीं तो एक दिन हमने उन लौकिक संबंधियों से कहा कि हमें पंडित जवाहर लाल नेहरू जी से और इंदिरा गांधी जी से भी मिलना है क्योंकि हमें उनको भी ईश्वरीय संदेश देना है। हमारी यह बात सुनकर वह मन ही मन में हम पर हंसते थे। प्रत्यक्ष रूप में वे हमें कहते थे कि नेहरू जी से आप कैसे मिल सकेंगे? वे तो जनता को मिलने का समय नहीं देते जब तक कि कोई ऐसा कार्य या कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण बात न हो। नेहरू जी तो भारत के प्रधानमंत्री हैं, बहुत व्यस्त रहते हैं। **(क्रमशः)**

शुद्ध संकल्प से श्रेष्ठ संकल्पों के खजाने को बचाओ

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

अव्यक्त इशारे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहनी (गुलजार)

पूर्व मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़

कई कहते हैं वैसे मुझे क्रोध नहीं आता है लेकिन जब कोई झूठ बोलता है तो फिर मेरे को बहुत क्रोध आता है। फिर नहीं सहन हो सकता है। तो बाबा कहता है कोई झूठ बोलता है वह आपको बुरा लगता है क्योंकि वह गलत है लेकिन उसके प्रति आपको क्रोध आया तो क्या यह किसी मुरली में श्रीमत है कि अगर कोई आपकी ग्लानि करे तो आप क्रोध करो! क्या यह राइट है? उसको अगर हम राइट करने चाहते भी हैं तो मैंने भी गलती की, उसने भी गलती की, तो गलत वाला गलत को ठीक कैसे कर सकता है। बंधा हुआ बंधे वाले को छुड़ा सकता है? तो यह क्या हुआ, इससे फायदा कुछ नहीं। अच्छा वह क्रोध करता है, झूठ बोलता है और मैं अगर सहन कर लूं, सहनशक्ति अपने में धारण कर लूं तो सहनशक्ति अच्छी या उसने झूठ बोला मैंने क्रोध किया वह अच्छा है, क्या अच्छा है? अगर सहन कर लिया तो अपने लिए ही किया। बाबा की श्रीमत है कि सहनशक्ति धारण करो, उसके कारण सहन किया। मैंने 40 बारी सहन किया, 41 वीं वारी मैंने थोड़ा बोल दिया। लेकिन हमने कोई उस आत्मा के लिए सहन नहीं किया। मैंने श्रीमत मानी है, बाबा कहता है - सहनशील बनो। भगवान की श्रीमत मैंने मानी तो उसका पुण्य कितना होता है।

भगवान की श्रीमत मानना, बाप को खुश करना और जिस बच्चे पर बाप खुश होता है, उसको कितनी अंदरूनी ताकत मिलती है। लेकिन 40 बारी सहन किया और 41वां वारी आग में जलते हुए में एक मिट्टी के तेल का बूंद डाल के सारा खत्म कर दिया। सहन अगर हम करते भी हैं तो बाबा के श्रीमत को देख करके सहन करते हैं। तो निगेटिव को पॉजीटिव में चैंज करो। चलो अगर कोई झूठ बोलता है लेकिन मैं अगर सच्ची हूं तो सच कभी छिपता नहीं है। सच्चे बाप के साथ मैं सच्ची हूं तो बाबा से ही सारा काम है कि आत्मा से है? बाबा तो हमको देख रहा है। बाबा को सामने रखो तो कभी भी निगेटिव, निगेटिव रूप से नहीं दिखाईं देगा, पॉजीटिव दिखाई देगा। अगर व्यर्थ सोचते हैं तो व्यर्थ सोचने से एनर्जी बहुत वेस्ट जाती है क्योंकि जो संकल्प व्यर्थ होता है, वह बहुत फास्ट जाता है। एक सेकंड में पता नहीं कहां-कहां पहुंच जाएंगे। ज्ञान का मनन करेंगे, शुभ चिंतन करेंगे तो उसकी स्पीड स्लो होती है। बाबा कहते हैं-अभी अपने श्वांस की, संकल्प की बचत करो। जो खजाने बाबा ने दिए हैं, यह वेस्ट क्यों करते हो? व्यर्थ माना ही वेस्ट, जो कोई काम के नहीं। व्यर्थ नहीं करो, शुद्ध संकल्प से श्रेष्ठ संकल्पों के खजाने को बचाओ। बाबा की आज्ञा को खास अंडरलाइन करो तो जो बाबा चाहता है - हर बच्चा मेरे समान बनें, वह बन जाएंगे। **(क्रमशः)**

खुद में परिवर्तन लाने के लिए पुरुषार्थ में होना पड़ता है सख्त

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी

पूर्व मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़

भगवान ने हमें बहुत अच्छी समझ दी है कि मेरा हर एक बच्चा समझदार बने। ज्ञान गुण में संपत्तिवान बनें। बाबा को भी नाज है बच्चे ऐसे अच्छे बनते हैं तो बाबा कहते हैं-ऐसे बच्चे शोकेस के शोपीस हैं। जैसे मधुबन आकर कितने खुश होते हैं। हम सब भी एक दो को देख खुश होते हैं और जो कोई नए आते हैं वह भी देखते ही खुश होते हैं क्योंकि सभी की एक ही लगन है।

तो अंदर से कूट-कूट करके निश्चय को मजबूत करना है। किसी भी प्रकार से जरा सा क्रिटीसाइज करने का जो संस्कार है वह भी न हो। तब हम सभी से प्यार लेने के अधिकारी बन सकते हैं। इसमें सिर्फ निश्चयपूर्वक अच्छी समझ और हिम्मत होनी चाहिए। हरेक अपने में उम्मीद रखें कि मैं परिवर्तन हो सकता हूं या कर सकता हूं। बाबा ने तो हमें उम्मीदों का सितारा, सफलता का सितारा बना दिया है। परन्तु ऐसी जिगरी रियलाइजेशन से अपने आप में परिवर्तन लाने के लिए पुरुषार्थ में थोड़ा सख्त होना पड़ता है। ऐसे बच्चों में परिवर्तन लाने के लिए बाबा भी कभी-कभी थोड़ा विकराल रूप दिखाते हैं।

बाबा ने कहा गंभीरता और रमणीकता का गुण धारण करो, यह आर्डनरी बात नहीं है। गंभीरता का गुण सर्वगुणों की खान है, जैसे मम्मा को देखा। ममता वाली मां नहीं, अच्छी मां, टीचर, गुरु जैसी मां। खुद के सबूत से सिखाने वाली मां। सबूत से अपने आप नजदीक स्नेह में आते हैं तो सीख जाते हैं। गंभीरता में गंभीर रूप पीछे होता है। पहले उसमें समाने की, समेटने की शक्ति होती है। सहन करना नहीं पड़ता है परंतु सहनशीलता की शक्ति आ जाती है। सहन करना माना कुछ सफर कर रहे हैं। सहनशीलता का गुण शीतल, शांत रखता है। यह सब गुण वा शक्तियां गंभीरता के स्वरूप को धारण करने में समाई हुई हैं। सागर जैसा समां लिया, समेट लिया, दिखाई न पड़े जैसे कुछ हुआ ही नहीं है तो समेटने का भी अक्ल चाहिए।

समेटने की शक्ति से योगी रहना आसान

बिखरे हुए को समेटने में बहुत मेहनत लगती है। इसलिए जो कुछ करो, साथ-साथ समेट लो तो हल्के रहेंगे। करते जाओ, समेटते जाओ जैसे कछुआ। योगी बनने के लिए कछुए का मिसाल देते हैं, किया, समेटा, तो जैसे किया ही नहीं। कछुवे का यादगार मंदिरों में भी रखते हैं। ऐसे समेटने की शक्ति से योगी रहना आसान होता है। समय बच जाता है। एनर्जी वेस्ट नहीं जाती है। भारीपन नहीं होता है, कर्त्तापन का अभिमान नहीं होता है। मैंने किया या यह मुझे करना है उस संकल्प से फ्री हैं। समेटने का अक्ल चाहिए वह भी क्विक। किया, फिनिस तो नेचुरल करना नहीं दिखाई पड़ेगा। करते हुए भी योगयुक्त कैसे हैं, वह प्रभाव वायुमंडल में पड़ेगा।

नेचुरल रूप में हो गंभीरता

पहले गंभीरता हमारे में नेचुरल रूप में आ जाए। चिंतन, वर्णन से फ्री हो जाएं और सर्वगुण एक्ट (कर्म) में काम में आते जाएं। शक्ति अंदर बढ़ती जाए, कम न हो। योग की शक्ति हो, कर्म में सफलता हो, गुण काम करते रहें। सफलता हर पल पीछे-पीछे छाया जैसी बनकर आएगी। सेवा में सफलता नहीं मिलती तो फिर थकावट आती है, फिर थके हुए में रमणीकता कहां से आएगी। बाबा कहते तुम जानी जाननहार तो बन गए हो परंतु ऐसे करने वाले भी बनो। इस बात को करने से भी समेटने की या समाने की जो बात है उसमें मदद मिल सकती है। समेटना भी है, समाना भी है और हर्षित भी रहना है, इसमें थोड़ा मेहनत है। सन्तुष्टता का गुण भी हमें रमणीक बनाता है। गंभीरता, सयाना और गुणवान बनाती है। संतुष्टता में हम तृप्त हैं, क्योंकि हमारे पास बहुत कुछ है, इसलिए अभी हम खुशी से दाता विधाता बनेंगे।

संपादकीय

शिवरात्रि महोत्सव पर इस बार कुछ नया करें

वैसे तो भारत में मनाए जाने वाले सभी पर्व विशेष हैं। लेकिन उसमें भी कुछ त्यौहार अमूल्य और मानव जीवन को शक्ति के साथ समृद्धि प्रदान करने वाले हैं। इन्हीं पर्वों में से एक है शिवरात्रि का पर्व। शिवरात्रि तो वैसे हर साल मनाते है लेकिन इस वर्ष इसे खास रूप में मनाएं। यह पर्व कई मायनों में कई महत्व को साथ लिए हुए है। जब हम शिवरात्रि पर भांग, धतूरा, बेलपत्र और अक का फूल चढ़ाते हैं। यह निरर्थक वस्तुओं का द्योतक है। अर्थात इस तरह की जो वस्तुएं जीवन में बुरी आदतें है उसे परमात्मा पर अर्पण करें। इससे अपके जीवन में मूल्यों का संचार होगा। क्योंकि परमात्मा शिव भोले भंडारी है। वे केवल बुरी चीजों को लेते है और उसके बदले श्रेष्ठ मूल्यों को मनुष्य के अन्दर अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए परमात्मा का ज्ञान और राजयोग मनुष्य के जीवन को श्रेष्ठ बना देता है। इससे व्यक्ति के अन्दर देवताई गुण आता है। बिना देवताई गुण के हम जीवन को अमूल्य नहीं बना सकते हैं। शिवरात्रि का यही संदेश है। जिससे मनुष्य का जीवन दैवी गुणों से युक्त बन जाये।

बोध कथा/जीवन की सीख

ज्ञान की पहचान

किसी जंगल में एक संत महात्मा रहते थे। सन्यासियों वाली वेशभूषा थी और बातों में सदाचार का भाव, चेहरे पर इतना तेज था कि कोई भी इंसान उनसे प्रभावित हुए नहीं रह सकता था। एक बार जंगल में शहर का एक व्यक्ति आया और वो जब महात्मा जी की झोपड़ी से होकर गुजरा तो देखा बहुत से लोग महात्मा जी के दर्शन करने आये हुए थे। वो महात्मा जी के पास गया और बोला कि आप अमीर भी नहीं हैं, आपने महंगे कपडे भी नहीं पहने हैं, आपको देखकर मैं बिल्कुल प्रभावित नहीं हुआ फिर ये इतने सारे लोग आपके दर्शन करने क्यों आते हैं?

महात्मा जी ने उस व्यक्ति को अपनी एक अंगूठी उतार कर दी और कहा कि आप इसे बाजार में बेच कर आएं और इसके बदले एक सोने की माला लेकर आना। अब वो व्यक्ति बाजार गया और सब की दुकान पर जा कर उस अंगूठी के बदले सोने की माला मांगने लगा। लेकिन सोने की माला तो क्या उस अंगूठी के बदले कोई पीतल का एक टुकड़ा भी देने को तैयार नहीं था। थक हार के व्यक्ति वापस महात्मा जी के पास पहुंचा और बोला कि इस अंगूठी की तो कोई कीमत ही नहीं है।

महात्मा जी मुस्कुराये और बोले कि अब इस अंगूठी को सुनार गली में जौहरी की दुकान पर ले जाओ। वह व्यक्ति जब सुनार की दुकान पर गया तो सुनार ने एक माला नहीं बल्कि अंगूठी के बदले पांच माला देने को कहा। वह व्यक्ति बड़ा हैरान हुआ कि इस मामूली सी अंगूठी के बदले कोई पीतल की माला देने को तैयार नहीं हुआ, लेकिन ये सुनार कैसे 5 सोने की माला दे रहा है!

व्यक्ति वापस महात्मा जी के पास गया और उनको सारी बातें बतायीं। अब महात्मा जी बोले कि चीजें जैसी ऊपर से दिखती हैं, अंदर से वैसी नहीं होती। ये कोई मामूली अंगूठी नहीं है बल्कि ये एक हीरे की अंगूठी है जिसकी पहचान केवल सुनार ही कर सकता था। इसलिए वह 5 माला देने को तैयार हो गया। ठीक वैसे ही मेरी वेशभूषा को देखकर तुम मुझसे प्रभावित नहीं हुए, लेकिन ज्ञान का प्रकाश लोगों को मेरी ओर खींच लाता है। व्यक्ति महात्मा जी की बातें सुनकर बड़ा शर्मिंदा हुआ।

संदेश: कपड़ों से व्यक्ति की पहचान नहीं होती बल्कि आचरण और ज्ञान से व्यक्ति की पहचान होती है..!

मेरी कलम से

शंकरानंद सरस्वती महाराज, श्रीमद जगतगुरू विश्वकर्मा महासंस्थान सावित्री पीठ मठ कासी, कर्नाटक

नारी को दूसरों के ऊपर आश्रित होना चाहिए लेकिन ऐसा समझना मिथक साबित हुआ

इस ज्ञान मार्ग में आने के लिए सबको प्रेरित करने का प्रयास अवश्य करूंगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आज सारे विश्व में हमारे भारत देश को कहा जाता हैं देव भूमि, ऐसे पवित्र धरा पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव पर स्वर्णिम भारत का निर्माण में यह संस्थान अहम भूमिका निभा रही है। इसके लिए परमात्मा और ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाइयों एवं बहनों की जितनी सराहना की जाए कम है।

आज हम स्वर्णिम भारत कैसे बनाएंगे, इस विचार को लेकर बहुत महात्माओं ने अपनी-अपनी बात गीता ज्ञान के द्वारा रखी, मैंने भी अपनी बात रखी। इस संस्थान के स्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा जो कार्य करके गए हैं वह कार्य सृष्टि में आज तक किसी ने नहीं किया। मैंने सुना था कि अगर एक स्त्री अथवा नारी है तो दूसरों के ऊपर आश्रित होना चाहिए लेकिन ऐसा सुनना मिथक साबित हुआ है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में माताएं और नारियों का समान और शक्ति देखते हुए मेरे मन की बात ग़लत सिद्ध होती है। मैं अब से पहले यही सोचता था कि जैसे बाल्यकाल में पिता के आश्रय में रहना चाहिए, युवावस्था में पति के आश्रय में रहना चाहिए, बुढ़ापे में पुत्र के आश्रय में रहना चाहिए। ऐसी कई मिथक बातें मैं अब तक सुन-समझ रखा था लेकिन यहां आकर मेरे विचार बहनों को देखते हुए बदल गए हैं। वो भ्रांतियां गलत सिद्ध हो गई हैं। इसलिए हम सभी भी पहली बार इधर इस विद्यालय में महान आत्माओं के दर्शन करने के लिए पधारें हैं। मैं और भी यहां के ज्ञान को गहराई से समझने का हर समय प्रयास करता रहूंगा। लोगों को भी इस मार्ग में आने के लिए प्रेरित करने का प्रयास अवश्य करूंगा। यहां दिया जा रहा ज्ञान समझने योग्य है। यहां आत्मा-परमात्मा की बातें बताईं जाती हैं। इसी से मानव का कल्याण होगा।

आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा सत्य दर्शन का प्रमाण

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 55

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

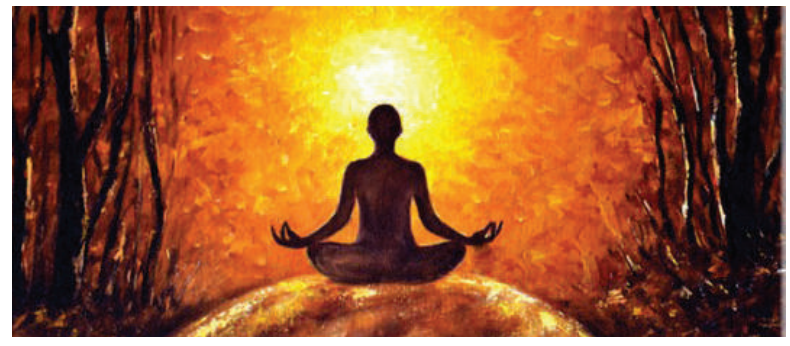

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आध्यात्मिक जगत का व्यापक परिदृश्य सत्य दर्शन के स्पष्ट साक्षात्कार द्वारा सामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार की मंगलकारी स्मृति से आत्मिक स्थिति, अवस्था एवं स्वरूप को शक्तिशाली बना देता है जिससे जीवन की अच्छाई द्वारा स्वयं का विधिवत मार्गदर्शन सहज हो जाता है। आध्यात्मिक अनुसंधान में सत्य दर्शन का रहस्योद्घाटन प्रामाणिक स्वरूप से होने के कारण, साधना के पथ पर गतिशील साधक के लिए–आत्मानंद के सानिध्य में परिष्कृत आत्मचिंतन द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति का विशिष्ट रूप से प्रेरणादाई आधार बनता है जिससे आत्मिक आश्रय से मौन साधना का मार्ग स्वमेव ही प्रशस्त हो जाता है।

पारदर्शी पुरुषार्थ की विशिष्ट भूमिका

जीवन में आत्मिक समृद्धि की अनुभूति हेतु आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा सत्य दर्शन की अनुभूति होती है जिससे संवेदनशील दृष्टिकोण के निर्माण में अंतर्मन के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करते हुए अंतःकरण की ध्वनि से प्रेरणादाई जीवन की व्यवहारिकता को निर्भय होकर निभाया जा सकता है। चेतना के परिष्कार में पारदर्शी पुरुषार्थ की विशिष्ट भूमिका नैसर्गिक अंतर्दृष्टि द्वारा आत्मिक स्वतंत्रता का गतिशील प्रभुत्व निर्मित कर देती है जिससे जीवन के आचरण पक्ष में अहिंसा परमो धर्मः' का आत्मगत उत्कर्ष हेतु जयघोष किया जाना व्यावहारिक दृष्टि से संभव हो जाता है।

हृदय की निर्मलता से वैचारिक उच्चता

सात्विकता की आत्मगत बोधगयता व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व के साथ चरित्र में भी हृदय की निर्मलता से वैचारिक उच्चता की स्थापना को सुनिश्चित करती है जिससे मानवीय मनोदशा की विराटता द्वारा समृद्धशाली चैतन्य अभिव्यक्ति जीवन के प्रांगण में प्रस्फुटित हो जाती है।

आध्यात्मिक जगत का व्यापक परिदृश्य, सत्य दर्शन के स्पष्ट साक्षात्कार द्वारा सामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार की मंगलकारी स्मृति से आत्मिक स्थिति, अवस्था एवं स्वरूप को शक्तिशाली बना देता है जिससे जीवन की अच्छाई द्वारा स्वयं का विधिवत मार्गदर्शन सहज हो जाता है।

कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन

जीवात्मा द्वारा आत्मिक अनुसंधान के माध्यम से आत्म हित के रहस्य को जब पूर्णतः आत्मसात कर लिया जाता है तब पवित्र भावना एवं विचारगत उच्चता द्वारा बेहतर जीवन की ओर अग्रसर होने के लिए पुरुषार्थ तीव्र हो जाता है जिसमें आत्मिक कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन की उपलब्धि समाहित रहती है।

सत्य दर्शन का प्रमाणिक प्रबोधन

आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन के विहंगम परिदृश्य द्वारा आत्मिक परिवेश की अनुभूति चेतना की चैतन्यता का जीवंत प्रमाण है जिससे मानव जीवन में अच्छाई और सच्चाई का आगमन होते ही बेहतर कार्य व्यवहार से आंतरिक संतुष्टि की सुखद स्थितियां निर्मित होने लगती हैं जो मनुष्य द्वारा उत्तम को अपनाने की निष्ठा का उत्कृष्ट परिणाम बन जाती हैं। श्रेष्ठता पर आस्था की व्यवहारिक अवस्था के प्रति श्रद्धायुक्त मनः स्थिति, मनुष्य को महान उपलब्धि हेतु मनुष्यता के मंगलकारी स्वरूप का साक्षात्कार धर्मगत स्थितियों के अंतर्गत सहजता से करा देती है जिसमें आत्मानुभूति से आत्मानंद का सत्य दर्शन आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा प्रमाणिक प्रबोधन के दिव्य स्वरूप में सदा विद्यमान रहता है।

'यदि कोई युवा मातृभूमि की सेवा नहीं करता है तो उसका जीवन व्यर्थ है'

चंद्रशेखर आजाद, स्वतंत्रता सेनानी

व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि कर्म के कारण होता है।

संत रविदास, कवि, संत

RNI:RAJHIN/2013/53539

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 10, हिन्दी (मासिक), पृष्ठ 4

महा शिवरात्रि विशेष 2023

सृष्टि के बदलाव का चल रहा है संधि काल

परमात्मा शिव के निर्देशन में बदल रही है दुनिया

अभी नहीं तो कभी नहीं

राजयोग की शिक्षा देकर परमात्मा रच रहे हैं नया संसार

वर्तमान में नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है। इसमें सृष्टि के सृजनकर्ता स्वयं नवसृजन की पटकथा लिख रहे हैं। वह इस धरा पर आकर मानव को देव समान स्वरूप में खुद को ढालने का गुरुमंत्र राजयोग सिखा रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात दुनिया की यह सबसे बड़ी और महान घटना बहुत ही गुप्त रूप में घटित हो रही है। वक्त की नजाकत को देखते हुए जिन्होंने इस महापरिवर्तन को भाप लिया है वह निराकार परमात्मा की भुजा बनकर संयम के पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या एक दो नहीं बल्कि लाखों में है। इन्होंने न केवल परमात्मा की सूक्ष्म उपस्थिति को महसूस किया है वरन इस महान कार्य के साक्षी भी हैं। महापरिवर्तन और कल्प की पुनरावृत्ति के संधिकाल को स्पष्ट करती **शिव आमंत्रण की विशेष रिपोर्ट....**

ऐसे रखी जा रही है नवयुग की आधारशिला...

नवसृजन का कार्य एक प्रक्रिया के तहत ईश्वरीय संविधान के अनुसार होता है। जैसे एक विद्यार्थी विद्या अध्ययन की शुरुआत पहली कक्षा से करता है और फिर वह साल दर साल आगे बढ़ते हुए एक दिन विशेष योग्यता प्राप्त कर न्यायाधीश, आईएएस, सीए, पायलट, शिक्षक, वैज्ञानिक और पत्रकार बनता है। इसी तरह निराकार परमात्मा ईश्वरीय संविधान के तहत शिक्षा देकर स्वर्णिम दुनिया, नवयुग के स्थापना की आधारशिला रखते हैं। स्वयं परमात्मा ही नर से श्रीनारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने के लिए राजयोग ध्यान सिखाते हैं। राजयोग को चार मुख्य विषय (ज्ञान, योग, सेवा और धारणा) में बांटा गया है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आज लाखों लोग अपना दाखिला कराकर पढ़ाई को पूरी लगन, मेहनत, त्याग और तपस्या के साथ पढ़ रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप मानव के व्यक्तित्व में दिव्यगुण, विशेषताएं और दिव्य शक्तियां स्वाभाविक रुप से झलकने लगती हैं। चार विषयों में प्रवीण होने के बाद आत्मा अपनी संपूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर उड़ जाती है।

शिव बाबा की दिव्य अनुभूति मैंने की है

परमपिता शिव परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव बाबा का ध्यान लगाती हूं। परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं। हमारा आत्मबल बढ़ता है। क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सत् चित आनंद स्वरूप हैं। लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गए हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्द ही इस दुनिया में स्वर्णिम युग आएगा।

– द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत

अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता

ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। इसलिए अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

श्रीमद्भ भगवत गीता से लेकर महाभारत, शिवपुराण,रामायण, यजुर्वेद, मनुस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण पर परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहां तक कि शिवपुराण में स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

मैं इस लोक में सत् धर्म की स्थापना करने आता हूं...

यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा...

शिव आमंत्रण, आबू रोड। गीता में भगवान के महावाक्य हैं 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सतधर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स तू मन को मुझ में लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि वह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाते हैं? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा राजयोग की शिक्षा के आधार पर देते हैं।

परमात्मा कहते हैं- वत्स! तू मन को मुझ में लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा। जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता है, उसी तरह आत्मा पर कई जन्मों पर चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, सतत् परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पापकर्म की मौल धुलती जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा, परमात्मा की शक्ति से संपूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

■ परमात्मा ने श्रीमद्भगवद गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते हैं। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं।

■ रामायण में लिखा है कि- बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुंह के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

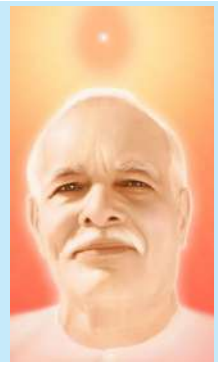

ब्रह्मा मुख से देते हैं दिव्य ज्ञान

शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान सागर हैं तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरुप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्माजी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान?

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं- स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात परमधाम।

स्थूल लोक... : मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना- परम आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्मलोक... : सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। उस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम... : सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अतः वहां न सुख है, न दुःख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।

सबने गाई ज्योतिर्लिंग की महिमा

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमसत्ता निराकार परमात्मा की सत्ता स्वीकारी

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहां श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम् में शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है- एक ओंकार निराकार तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जीजस ने कहा गॉड इज लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्लिंग परमात्मा का यादगार और स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

शिव आमंत्रण, आबू रोड

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं परमात्मा एक है। सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद हैं, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिंह्न है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।

रावण को हराने श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकरजी भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पांडवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम्

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्वभर के सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं अपनी पहचान बताते हैं। परमात्मा संदेश दे रहे हैं कि जीवन में सच्चे गीता ज्ञान को धारण कर राजयोग मेडिटेशन को अपनाने से सर्वदुखों से छूट जाएंगे। **- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू**

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रुप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

21 जन्मों का क्या है राज

परमात्मा इस धरा पर आकर ज्ञान देते हैं और मनुष्य आत्माओं का आह्वान करते हैं कि मेरे बच्चों मुझ से योग लगाओ तो मैं तुम्हें 21 जन्मों की बादशाही दूंगा। तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए सर्व दुःखों से मुक्त कर स्वर्णिम दुनिया में ले चलूंगा। कलियुग के कलिकाल में जब मनुष्य आत्मा पापों के बोझ तले तबकर तमोप्रधान हो जाती है तो परमात्मा राजयोग की शिक्षा देकर सतोप्रधान बनने की राह दिखाते हैं। सतयुग में प्रत्येक आत्मा के 8 जन्म होते हैं, वहीं त्रेतायुग में 12 जन्म होते हैं। सतयुग और त्रेतायुग में सर्व आत्माएं सदा सुखी, आनंदमय रहतीं हैं। उस स्वर्णिम दुनिया में दूर-दूर तक दुख को नामोनिशान नहीं होता है। प्रकृति भी सुखदायी रहती है।

शिवजी के बेटे हैं शंकरजी

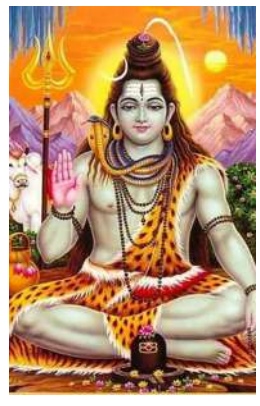

शिव आमंत्रण, आबू रोड

परमपिता शिव जी के शंकरजी बेटे हैं। इस सृष्टि के विनाश कराने के निमित्त परमात्मा ने ही शंकरजी को रचा। यहीं नहीं ब्रह्मा, विष्णु, शंकरजी के रचनाकार, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च सत्ता, परमेश्वर शिव ही हैं। वह ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं।

परमपिता परमात्मा शिव 33 करोड़ देवी-देवताओं के भी महादेव एवं समस्त मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सारी सृष्टि में परमात्मा को छोड़कर सभी देवी-देवताओं का जन्म होता है। जबकि परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शंकरजी का आकारी शरीर है। शंकरजी, परमात्मा शिव की रचना हैं। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। ध्यानमग्न शंकरजी की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

- शिव और शंकर में वहीं अंतर है जो एक बाप और बेटे में होता है।
- परमात्मा शिव परमात्मा की रचना हैं- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर।
- परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं की ही प्रतीक हैं। परमात्मा शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र और तीन रेखाएं परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। इस सृष्टि के सारे संचालन में इन तीनों देवताओं का ही विशेष अहम योगदान है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लाखों लोगों को मिला जीवन का लक्ष्य

अब तक 20 लाख लोगों ने की परमात्म मिलन की अनुभूति

हीरो के जौहरी से विश्व शांति के मसीहा का सफर...

सन् 1937 की बात है। हीरे-जवाहरात के उस समय के प्रसिद्ध जौहरी दादा लेखराज की जिंदगी सुख-शांतिमय चल रही थी। लेकिन परमात्मा को पाने की दिल में इतनी प्रबल इच्छा शक्ति और उत्कंठा थी कि उन्होंने अपने जीवन में 12 गुरु बनाए थे। वह गुरु की आज्ञा को भगवान की आज्ञा मानते थे। दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं की थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा को यह बात समझ नहीं आई।

जब वह घर पहुंचे और एक दिन कमरे में बैठे थे, तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि- **निजानन्द् स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।** इस परिचय के साथ परमपिता परमात्मा ने आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

नारी को ताज देकर शक्ति स्वरुपा बनाया...

दादा ने अपना सारा कारोबार समेटकर विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य की बहुत ही छोटे स्तर से नींव रखी। यह वह दौर था जब नारी की समाज में दशा ठीक नहीं थी। उसे दीन-हीन भाव से देखा जाता था। चूंकि परमात्मा को भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ भी करना था। नारी को शक्ति स्वरुपा के ताज से सुशोभित करने के लिए उन्होंने बाकायदा नारी शक्ति का एक संगठन बनाया, जिसे नाम दिया गया ओम मंडली। इसमें संचालन से लेकर ज्ञान अमृत देने का दायित्व नारी शक्ति को दिया। नारी के जीवन की दिशा और दशा बदलने की संभवतः इस युग का वह पहला प्रयास था। बाबा की विराट सोच ही थी कि नारी को विश्व शांति और युग परिवर्तन का कलश सौंपकर उनका हर पल मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही परमात्मा ने दादा को दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, जिन्हें हम सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहने लगे।

दिव्यगुणों की धारणा से दिव्य जीवन बनाने की साधना में जुटे

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामथ्र्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरो कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। आत्मा का परमात्मा महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

1937 में हुई ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना

1950 में माउंट से विश्व सेवाओं का शंघनाद

1970 में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

140 देशों में राजयोग का दिया जा रहा संदेश

46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

20 लाख लोग विद्यालय के विद्यार्थी

20 प्रभागों से समाज के सभी वर्गों की सेवा

07 पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से दिए

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव आज मूर्तरुप ले रहा है...

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार 1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें ही इस संगठन के सारथी थे। 1950 में बाकायदा एक ट्रस्ट बनाकर ओम मंडली का नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा गया। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को नियुक्त किया गया, जिन्हें प्यार से सभी मम्मा कहकर पुकारते थे। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह महान संकल्प देखते ही देखते लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। इस नये और अनोखे ज्ञान को लोगों ने दिल से स्वीकारा, अपनाया और परमात्म राह पर चल पड़े। आज इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भारत सहित पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब पांच हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पावन संदेश दिया जा रहा है। 46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रुप से तन-मन-धन को परमात्म यज्ञ में स्वाहा कर सेवा में तत्पर हैं। 20 लाख से अधिक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विद्यार्थी हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् का यह भाव आज मूर्तरुप लेते हुए दिखाई दे रहा है।

14 वर्ष ज्ञान-योग की भट्टी में तपाया...

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। भाई-बहनों को ज्ञान और योग की भट्टी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है। इसी तपस्या का परिणाम है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड के खिताब से नवाजा गया था। वह 60 वर्ष की उम्र में विदेश की सरजमीं पर पहुंचीं और अकेले दम पर 80 देशों में आध्यात्म का परचम फहराया। 104 वर्ष की आयु में वह अव्यक्त हो गईं। लेकिन अपने पीछे संदेश छोड़ गईं कि नारी जब महान संकल्प के साथ कदम बढ़ाती है तो परमात्मा भी ऐसे बच्चों पर नाज करता है।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। यहां तक कि पशु-पक्षी भी हमारे संकल्पों के आधार पर चलते हैं। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं। सारा जीवन रास से भरपूर होता है।

क्या है राजयोग मेडिटेशन

राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता शिव परमात्मा को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं उनका मन ही मन-बुद्धि द्वारा विजुलाइज करके उनके स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करते हैं। राजयोग अंतर्जगत की यात्रा है, जिसमें हम स्व चिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं। जब हम नियमित तौर पर राजयोग ध्यान में जैसे- मैं एक महान आत्मा हूं... मैं भाग्यशाली आत्मा हूं... मैं सफलता मूर्त आत्मा हूं... मैं सतयुगी आत्मा हूं...मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है... इन संकल्पों को करते हुए जब हम परमात्मा की दिव्य शक्तियों को बुद्धि के द्वारा मन की आंखों से विजुलाइज करते हैं तो फिर हमारी आत्मा का स्वरूप, संस्कार और विचार उसी रूप में ढलने लगते हैं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला-सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 9414172596, 6377090960, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org
komal@bkivv.org

■ स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539

www.shivamantran.com
Madhuban news
Youtube- https://www.youtube.com/c/madhubannews

समस्या- समाधान

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक

हम सर्वशक्तिवान परमात्मा के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। पावर ऑफ थॉट यानी विचार की शक्ति को जिंदगी में अपनाकर इसे बेहतर कर सकते हैं। अपने अंतर्मन में यह बात बिठा लें कि हम सभी महान हैं और दूसरी महत्वपूर्ण बात है जो इस टॉपिक से जुड़ा हुआ है कि हम भगवान के बच्चे हैं, वह सर्वशक्तिमान हैं तो हम क्या हुए? जैसे टाइगर का बच्चा टाइगर होता है तो वह कुत्तों से डर जाएगा? टाइगर का छोटा सा बच्चा एक बार भी कुत्तों से नहीं डरेगा। जो शक्ति उसके मां-बाप में है वह उसमें आ जाती है। हम सब भी सर्वशक्तिमान की संतान हैं इसलिए हम भी बहुत शक्तिशाली आत्माएं हैं।

मनुष्य के मन में बहुत शक्तियां हैं-

इस संसार को आपको अच्छी तरह से अनुभव करना है और अपनी शक्तियों को जानना है। इस अनुभव को बढ़ाना है कि हम बहुत शक्तिमान हैं। इसके लिए एक शब्द जोड़ लें और उसके आधार पर सबकॉन्शियस माइंड को यूज करने का जो प्रयोग है उसका प्रयोग अभी से शुरू करें। वह परमात्मा सर्वशक्तिमान है और हम उसकी संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। सभी यह बात सुनते ही आए होंगे की मनुष्य के मन में बहुत शक्तियां हैं वह सोई रहती हैं उन्हें जगाओ पर किसी ने यह नहीं बताया कि जगाओ कैसे? क्यों वह सोई हैं? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है इसके उत्तर को जानते हैं हमें जगाना है उनको, जितना हम सवेरे उठते ही याद करेंगे कि मैं सर्वशक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान हूं तो हमारे मन की शक्तियां जागने लगेंगी। यह सिंपल तरीका है।

गॉड को कहते हैं ऑलमाइटी-

जैसे कोई सोचने लगे कि मैं बहुत बीमार हूं, मैं ठीक होऊंगा ही नहीं, तो क्या होगा? बीमार ही होगा ना और यदि आप उसे विश्वास दिला दो कि आप अभी हमारे पास आ गए हो अभी आपको ठीक होना ही है जल्दी आपकी बीमारी गई की गई तो इन विचारों से उसकी शक्तियां जग जाएंगी, उसमें खुशी, एनर्जी, एक आस पैदा होगी। तो हम मास्टर सर्वशक्तिमान हैं लाखों लोगों ने इस संकल्प का प्रयोग किया है। बहुत सुंदर-सुंदर अनुभव हैं उनके। उनमें से कुछ आपके सामने रखूंगा। शक्तियां जिसे हम पावर और माइट कहते हैं यह जो स्प्रीचुअल शक्ति है इसे माइट कहते हैं इसलिए गॉड को कहते हैं ऑलमाइटी।

मन भटकता है तो पांच स्वरूपों का अभ्यास करें-

एक दो मिनट सात बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं। मेरे अंग-अंग से शक्तियों की लाल किरने फैल रही हैं और ये किरणें दूर-दूर तक फैलने लगीं और मेरे चारों ओर शक्तियों का घेरा बन गया है। इसके बीच में मैं हूं। अपने को एक दो मिनट बैठा दें उस बीच में। बहुत पावरफुल फीलिंग होगी, सुरक्षित रहेंगे। कोई भटकती आत्मा भी इस शक्तियों के घेरे में प्रवेश नहीं कर सकेगी। कोई भी टाइम कर सकते हैं। दूसरा अभ्यास करेंगे- मैं परम पवित्र आत्मा हूं। मेरे अंग-अंग से पवित्रता की गोल्डन किरणें फैल रही हैं। सात बार ये अभ्यास करेंगे और मेरे चारों ओर शक्तियों का एक पावरफुल घेरा बन गया है। जिसको योग में कठिनाई होती है, मन भटकता है वो पांच स्वरूपों का अभ्यास करें। तीन चार बार ये चक्र घुमाएं।

मैं अपने घर की इष्ट देव-देवी हूं...

हमारे मन को कुछ काम चाहिए। हम इसे कुछ काम दें तो ये शांत होगा। हम संकल्प ही उसे नहीं देते तो भटक जाता है। कुछ देर के लिए फील करना शरीर है ही नहीं, केवल मैं निराकार आत्मा और मेरे चारों ओर शक्तियों का घेरा है। देव स्वरूप में अभ्यास करना है। चारों ओर पवित्रता और शक्तियों का घेरा है। माताओं के लिए दो बहुत अच्छे स्वमान- मैं अपने घर की इष्ट देव-देवी हूं। फीलिंग सहित कम से कम 10 बार रोज बीच-बीच में करना है। जिसको अपनी प्योरिटी बहुत बढ़ानी है मैं पवित्रता की देवी हूं। आपसे पवित्रता की किरणें फैलने लगेंगी। लोग कहेंगे आप बहुत पवित्र आत्मा हैं, पुण्य आत्मा हैं। भाई लोग यह अभ्यास करेंगे मैं एक महान आत्मा हूं...मैं बहुत शक्तिशाली आत्मा हूं... मैं महावीर हूं।

सही या गलत निर्णय का आधार मन का संतुलन है

स्व प्रबंधन

बीके ऊषा
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

चुनौती के वक्त जो लोग सही निर्णय ले लेते उनके लिए अवसर के द्वार खुल जाते हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। निर्णय शक्ति को विकसित करने के लिए मन की एकाग्रता एवं बुद्धि का संतुलन चाहिए। व्यक्ति का अहंकार ही उसे सही निर्णय नहीं लेने देता। आज दुनिया में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है। परन्तु उसके सामने इतनी चुनौतियां हैं जो उन चुनौतियों के बीच रहकर हर परिस्थिति में, हर समस्या में सही निर्णय लेकर सफलता पाना संभव नहीं होता। जिस तरह एक तराजू में कुछ भी रखो तो उसका सही निर्णय तभी मिलता है जब उसका बीच का कांटा एकाग्र होता है। अगर वह किसी तरफ झुका होता है तो उसका निर्णय यथार्थ नहीं होता। ऐसे ही जब मन का कांटा एकाग्र होता है तब व्यक्ति कैसी भी परिस्थिति में यथार्थ निर्णय ले सकता है। जैसे एक धनुर्धर जब निशाने पर तीर छोड़ता है और उस वक्त थोड़ा सा अंगुठा हिल जाए तो तीर निशाने पर नहीं लगता है। वैसी ही चुनौती के वक्त

अगर हमारी बुद्धि हलचल में आ जाती है या तनाव के कारण अंदर का संतुलन बिगड़ जाता है तो भी यथार्थ निर्णय नहीं ले सकते। किसी ने सही कहा है कि चुनौती हर व्यक्ति के सामने आती है परन्तु किसी-किसी के लिए यही चुनौती अवसर के द्वार खोल देती है और किसी-किसी के लिए यही चुनौती उसे पछाड़कर जीवन में अधोगति को प्राप्त कराती है। अक्सर करके दुनिया में देखा गया है कि चुनौती के वक्त जो लोग सही निर्णय ले लेते उनके लिए अवसर के द्वार खुल जाते हैं और चुनौती के वक्त जो व्यक्ति गलत निर्णय ले लेता है उसको असफलता मिलती है।

अब व्यक्ति को सही या गलत निर्णय का आधार उसके मन और बुद्धि की एकाग्रता और संतुलन पर होता है। अगर व्यक्ति का मन-बुद्धि तनाव से ग्रसित है या नकारात्मक और व्यर्थ विचारों से ग्रसित है तो वह सही-गलत को पहचान नहीं सकता। परिणाम स्वरूप गलत निर्णय लेकर उसे कभी-कभी बड़ा नुकसान झेलना पड़ता है। मनुष्य अगर अनुभव के आधार से विवेकयुक्त बुद्धि से निर्णय लेता है तो सफल हो जाता है। इस बात के सबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है-

एक बंजारा था। वह बैलों पर मुल्तानी मिट्टी लादकर दिल्ली की तरफ जा रहा था। रास्ते में कई गांवों से गुजरते समय उसकी बहुत सी मिट्टी बिक गई। बैलों की पीठ पर लदे बोरे आधे तो खाली हो गए और आधे भरे रह गए। अब वे बैलों की पीठ पर कैसे टिकते? क्योंकि भार एक तरफ हो गया। नौकरों ने पूछा कि क्या करें? बंजारा बोला अरे सोचते क्या हो, बोरों के एक तरफ रेत भर लो। यह राजस्थान की जमीन है, यहां रेत बहुत है। नौकरों ने वैसा ही किया। बैलों की पीठ पर एक तरफ आधे बोरे में मुल्तानी मिट्टी हो गई दूसरी तरफ आधे बोरे में रेत हो गई। दिल्ली से एक सज्जन उधर आ रहे थे। उन्होंने बैलों पर लदे बोरों में एक तरफ रेत झरते हुए देखी तो वे बोले कि बोरों में एक तरफ रेत क्यों भरी है? नौकरों ने कहा सन्तुलन बनाने के लिए। वे सज्जन बोले- अरे, यह तुम क्या मूर्खता करते हो? तुम्हारा मालिक और तुम एक जैसे ही हो। बैलों पर बेवजह ही भार ढोकर उनको मार रहे हो। मुल्तानी मिट्टी के आधे-आधे दो बोरों को एक ही जगह बांध दो तो कम-से-कम आधे बैल तो बिना भार के खुले चलेंगे। नौकरों ने कहा आपकी बात तो ठीक जंचती है, पर हम वही करेंगे, जो हमारा मालिक कहेगा। आप जाकर हमारे मालिक से यह बात कहो और उनसे हमें हुक्म दिलवाओ। वह बंजारे से मिला और उससे बात कही। इस पर वह राजी हो गया और बैलों का भार भी कम हो गया।

योगी का भोजन सूक्ष्म से सूक्ष्मतम होता जाएगा

आध्यात्म की उड़ान

डॉ. बीके सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

एक योग के लिए भोजन का संयम सबसे जरूरी है, जितना भोजन पर संयम होगा, तपस्या उतनी तीव्र होगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आत्म अभिमानी बनने में सबसे बड़ी बाधा है भोजन। जब तक इस पर काम नहीं किया जाए आत्मा चिपकी रहेगी शरीर से नीचे। इसको उड़ाना है ऊपर, हल्कापन आ जाए शरीर में। भागने को कहो तो कितना भी भागे, कसरत करने को कहो तो कितना भी कसरत करे, कितनी भी सीढ़ियां चढ़े, ऐसी शक्ति, ऐसी ताकत तभी आएगी जब भोजन हल्का हो। ताजा और सात्विक हो। योगी के लिए तेल-मसाले के भोजन से जितना हो सके बचना चाहिए।

अव्यक्त और साकार महावाक्य हैं - बाबा के योगी का भोजन सूक्ष्म से सूक्ष्मतम होता जाएगा, ख़ुशी जैसी खुराक नहीं। ख़ुशी ही उसकी ख़ुराक है। योग में बैठ गए तो ऐसे बैठ गए की खो गए उसे याद ही नहीं। सबसे बुरी आदत है भोजन। ये खाऊं वो खाऊं, क्या खाऊं और कब खाऊं। अभी-अभी नाश्ता किया, अभी-अभी टोली खाई। दोपहर में क्या बनाना हैं। दिन-रात बुद्धि घूम रही है उधर। विषय वैतरणी नदी से निकले तो तेल वैतरणी नदी में डूबे हुए हैं। रोटी है उसको तेल लगाओ, चावल है सफेद उसका कलर चेंज करो, दाल बनी हुई है उसको वापस डालो। सूरज ने इतनी मेहनत से पकाया है। पका-पका के अम्लीय भोजन बन जाता हैं। कितने सारे लोग हैं उनको पेट की समस्या है। योग ही नहीं करने देता हैं। परमधाम में उडऩे नहीं देता है। पेट नीचे खींचता है।

उत्तेजना वाले पदार्थों से आते हैं विकार-

विकार आते ही तब है जब शरीर में उत्तेजना वाले पदार्थ डाले जाते हैं। एक तरफ है अशोक वाटिका जहां हम जा रहे हैं। ब्राह्मणों ने बीच में छौंक वाटिका बना लिया है। छौंक लगाते हैं हर चीज को क्योंकि इसको ऐसे ही आदत पड़ गई है, इसको केवल चाहिए, यह गुलामी है। इस गुलामी से मुक्ति, यह एक महत्वपूर्ण कदम है। आध्यात्म की यात्रा में और बीमारी से

मुक्त हो जाएंगे, कोई बीमारी आएगी ही नहीं। जो प्राकृतिक है, जो सूर्य का पका हुआ है उसमें ऊर्जा है, शक्ति है, तेज है।

सप्ताह में एक दिन जरूर करें उपवास-

सप्ताह में एक दिन उपवास तब पता चलेगा हममें शक्ति कितनी है, कितना हम दूर रह सकते हैं। हफ्ते में जो नहीं कर सकते 15 दिन में एक बार और जो कर सकते हैं वो करें। जो नहीं कर सकते वो कम से कम 18 घंटे का तो करें,14 घंटे का करें, 12 घंटे का करें। आठ बजे खा लिया अब दूसरे दिन सीधा 8 बजे, रात में कुछ नहीं। 8 घंटा, 12 घंटा कंट्रोल आएगा। हफ्ते में एक दिन उपवास। कोई भी एक दिन चुन लो। शाम के 6 बजे से अगले दिन के 6 बजे तक, 6 बजे तोड़ो उसे नींबू पानी से, नारियल पानी से, नुमाशाम का योग करो और फिर भोजन हल्का लें। वो 24 घंटे आत्मा उड़ जाएगी आकाश में, परमधाम में। शरीर है कि नहीं पता ही नहीं चलेगा। जो नहीं कर सकते हैं वो दो-दो तीन तीन घंटे में फ्रूट्स ले सकते हैं। जो लोग कर सकते हैं निर्जला।

उपवास से हुए कई अनुभव-

पूरी दुनिया के ढेर सारे ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी हैं जिन्होंने ये किया। उन्होंने अपने ढेर सारे अनुभव लिखे हैं क्या हुआ कैसे शिव बाबा से कनेक्शन जुड़ गया, क्या-क्या अध्यात्म में अनुभव हुए। योग में क्या-क्या अनुभव हुए। ताकत भोजन से नहीं आती। जो कर सकते हैं वो 24 घंटे, जो उसको ओर बढ़ा सकते हैं वो 36 घंटे। पूरे पेट की सफाई हो जाएगी। सारी बीमारियों का एक ही कारण है आंत में फंसा हुआ मल। वो पूरा साफ हो जाए।

बीमारी का एक ही इलाज उपवास-

जब भी उपवास करें तो सादा पानी लें। अनुभव होगा कि कितनी शक्ति आ गई है। ब्लॉक हो चुका आंत और कब्ज सारी बीमारियों की जड़ है। इसके लिए वह भोजन लेना है जिससे कब्ज न हो। वो हर चीज जिससे कब्ज होती है वो योगियों का भोजन नहीं है। मैदा चिपकता है। इम्युनिटी का संबंध पेट से हैं। उच्च कंपन भोजन, कम कंपन भोजन, हल्का भोजन, घना भोजन, सात्विक भोजन, राजसिक भोजन, तामसिक भोजन जितना जितना आहार हल्का होते जाएगा, शरीर में जो प्राण शक्ति है वह बढ़ेगी और फिर ऊर्जा आयेगी। जो बहुत खाते वो शक्तिशाली नहीं होते, वो तो कमजोर होते हैं। वो तो जड़ता होती है उनमें, स्थूलता होती है, नींद आती है। एक इलाज है हर बीमारी का उपवास। धीरे-धीरे करना है मार्गदर्शन में।

तो ब्रह्मचर्य हो जाएगा अखंड-

उपवास शुरू करना है 12 घंटे से, फिर 14 घंटा, फिर 18 घंटा। यह जब कॉन्फिडेंस आ गया तो फिर फ्रूटस वाला करो। जब इसमें कॉन्फिडेंस आ गया तब केवल लिक्विड (जूस) पर, जब इसमें कॉन्फिडेंस आ गया तो फिर ड्राई फास्टिंग और जिसने उसका टेस्ट एक बार ले लिया उसके लिए वो सहज हो जाता है। थकान तो तब आती है जब भोजन खाते हैं, क्योंकि हमारी ऊर्जा तीन चीजों में जा रही है। खाने में, पचाने में और फेंकने में। ये तीनों ही चीजों को आराम मिल गया। शक्ति बढ़ गई, शक्ति आ गई है अंदर। ये एक नया अनुभव है और यह सबसे गहरी आदत है। सबसे गहरी आदत पर अटैक करो बाकी सब आदत हिलने लगेंगी। कुमारों को चिंता है काम, ब्रह्मचर्य ये सब अपने आप आएगा। माताओं-बहनों को चिंता है बीमारी न हो। बीमारी तो आ ही नहीं सकती।

राजयोगी किड्स विंटर कॉर्निवाल में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में छह दिवसीय राजयोगी किड्स विंटर कॉर्निवाल का आयोजन किया गया। इसमें भारत सहित अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया से आए पांच सौ से अधिक बच्चों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाई।

समापन में पहुंचीं शकलाका बूम बूम जैसी कई पॉपुलर टीवी शो में अभिनय कर चुके एक्टर किंशूक वैद्य ने कहा कि आप अपने माता-पिता का धन्यवाद करें कि वह आप सबको ऐसे सुंदर जगह पर लाए हैं। यहां आपको जीवन की कई तरह की सीख प्राप्ति हुई है। मैं समझता हूं कि पढ़ाई वह नहीं होती जो हम किताबों में पढ़ते हैं, लेकिन सच्ची पढ़ाई हम लोगों के बीच प्रैक्टिकल रूप में पढ़ते हैं। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि आपको देखकर हमें भी अपना बचपन याद आ गया। जब मैं यहां आया था तो दादी ने हमें बहुत कुछ सिखाया। डायरी देकर रोज परमात्म मुरली महावाक्य लिखने को कहा करती थीं।

राजयोगिनी बीके गीता ने कहा कि आप सब बच्चों को शिवबाबा की आश पूरी करनी है। जो काम बड़े-बड़े भी नहीं कर पाए उस काम को आप सब बच्चों को करना है। विभिन्न प्रतियोगिताओं में फर्स्ट, सेकंड, थर्ड स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को सम्मानित किया ।

ये प्रतियोगिताएं हुईं...

100 मीटर रेस में दो एज ग्रुप में, पहला एंजेल दूसरा डायमंड के साथ प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त कर गोल्डन, सिल्वर और ब्रांच मेडल जीते। इनमें बालकों के अलावा बालिकाओं ने विशेष बाजी मारी। एंजल ग्रुप में अहमदाबाद की ताशवी शर्मा और जलगांव से स्वामीम चौधरी ने 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। जलगांव की दिव्या पाटिल ने 50 अंकों के साथ सिल्वर मेडल जीता। पुणे से प्रियंका बालमुकुंद 25 अंकों के साथ ब्रांज पर कब्जा जमाया। डायमंड एज ग्रुप के अंतर्गत न्यू दिल्ली से रेनू और संबलपुर से स्वराज भोक्ता ने 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। लेमन स्पून रेस में दिल्ली की प्रदीपता राहुल और म्यूजिकल चेयर गेम में बैंगलुरु की आरुषि खेरे 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। लॉन्ग जंप में संबलपुर से आए स्वराज भोक्ता ने 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। स्किपिंग रेस प्रतियोगिता में दिल्ली से आए सनम शिव ने 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। मोनो एक्टिंग प्रतियोगिता में मलकापुर से आए कियान विवेक डागा और महिपालपुर से आई हुई रैना कुमारी 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। निबंध में दिल्ली से आई प्रदीपता राहुल और अमरावती से राघव चांडक 100 अंकों के साथ गोल्ड जीता। स्पर्धाओं में मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका, बीके भानू, बीके श्रीनिधि की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

सागर में जिला स्तरीय मीडिया सेमिनार आयोजित, पत्रकारों का किया सम्मान

समस्या के साथ समाधान भी पेश करें: उपाध्याय

शिव आमंत्रण, सागर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मकरोनिया सागर सेवाकेंद्र पर मीडिया सेमिनार एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें जिलेभर से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों ने भाग लिया। भोपाल से पधारे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के प्रो. गिरीश उपाध्याय ने कहा कि हमें सहानुभूति से समानुभूति की ओर कदम बढ़ाना होंगे। आज जरूरी है कि हम समस्या के साथ उसका समाधान भी पेश करें। समय आ गया है अब समाज मीडिया को राह दिखाए। समाधान की राह अब समाज को ढूंढना होगा और वह मीडिया को आईना दिखाए। ताकि मीडिया की आंखें खुल सकें।

दिल्ली से आये दूरदर्शन के सलाहकार संपादक और एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के एंकर मनीष वाजपेयी ने कहा कि समाधान के पहले हमें समस्या को गहराई से जानना

होगा। जब तक हम समस्या को समझेंगे तभी उसका उचित समाधान कर पाएंगे। राजयोग मेडिटेशन में जीवन के सभी समस्याओं का समाधान समाया हुआ है। राजयोग हमें खुद से जोड़ता है। हम खुद के बारे में बेहतर सोच पाते हैं। पत्रकार समाज की चिंता करता है लेकिन खुद के बारे में चिंतन नहीं करता। अपने कर्म के साथ राजयोग को शामिल कर लेंगे तो आपका कर्म आसान और तनावमुक्त हो जाएगा। सागर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया दीदी ने कहा कि मीडिया के सभी भाई आपके पास कलम की ताकत है। आप अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा दे सकते हैं। सकारात्मक खबरों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दें। बीके लक्ष्मी राजयोग मेडिटेशन की अनुभूति कराई। संचालन बीके नीलम ने किया। इंक मीडिया के निदेशक डॉ. आशीष द्विवेदी, पत्रिका के संपादक बृजेश तिवारी, शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेन्द्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संकल्प से सिद्धी

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से मिला हौसला, राजयोग की शक्ति से ब्लड कैंसर को दी मात

डॉ. बीके आशा ने कैंसर रोगियों के लिए पेश की मिसाल, पटियाला के खालसा कॉलेज में इंग्लिश की असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में हैं कार्यरत

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूं... मैं संपूर्ण स्वस्थ आत्मा हूं... मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है... मैं भाग्यशाली आत्मा हूं... मैं आत्मा बीमारी से ताकतवर हूं। ये चंद लाइनें नहीं वरन मेरे जीवन को फिर से बसंत बनाने वाले महावाक्य, परमात्म वरदान साबित हुए। राजयोग मेडिटेशन में इन स्वमानों के लगातार संकल्प से मैंने चंद महीनों में ब्लड कैंसर को हराकर जिंदगी की नई शुरुआत की। आज मेरे पास ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और ब्रह्माकुमारी बहनों के शुक्रिया के लिए शब्द नहीं हैं। यह कहना है हरियाणा के पटियाला की निवासी डॉ. बीके आशा का। आप खालसा कॉलेज में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर सेवाएं दे रहीं हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में आपने जीवन के कठिन दौर की यादों और राजयोग मेडिटेशन के चमत्कार के बारे में बताया। पेश हैं बातचीत के प्रमुख अंश...

अक्टूबर 2017 की बात है। जिंदगी में सबकुछ सामान्य चल रहा था। अचानक एक दिन टेस्ट में पता चलता है कि मुझे ब्लड कैंसर है। यह सुनते ही कुछ पल के लिए सहम गई, फिर खुद को संभाला और तभी संकल्प किया कि इस पर जीत पाना है। इलाज जारी था और तीन कीमो हो चुकी थीं। लेकिन समझ नहीं आ रहा था कि कैंसर पर संपूर्ण रीति विजय कैसे पाएं। इस बीच कनाडा में रहने वाली मेरी बहन ने ब्रह्माकुमारीजके बारे में बताया। वह नियमित तौर पर ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी की क्लास यूट्यूब पर सुनती हैं। उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि आप भी सुनें। जैसे ही मैंने शिवानी दीदी के मोटिवेशनल क्लास सुनना शुरू किए तो जिंदगी में एक नई रोशनी दिखने लगी। फिर मैंने नजदीकी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाकर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। कोर्स के दौरान ही मेरे मन में चल रहे सभी सवालों के जवाब मिल गए। जिसकी तलाश में थी वह सब मिला। परमात्मा की तलाश पूरी हो गई। फिर राजयोग के नियमित अभ्यास से मैंने चौथी कीमो के दौरान अपने कैंसर को परास्त कर विजय पाई।

हॉस्पिटल में ही लगाया ध्यान, मुरली पढ़ी-

डॉ. आशा ने बताया कि कीमो के दौरान हॉस्पिटल में 21 दिन रहना होता है। इस पर मैंने अप्रैल 2018 में हुई चौथी कीमो के दौरान राजीव गांधी हॉस्पिटल, दिल्ली में ही रोजाना परमात्म महावाक्य (मुरली) पढ़ी। इससे रोज नई-नई ज्ञान की प्वाइंट मिलतीं और मुझे हौसला। धीरे-धीरे मुझे सारे सवालों के जवाब मिल गए। मन की सारी व्याधियां, दर्द दूर हो गए। साथ ही नियमित राजयोग ध्यान भी किया। पहले माता-पिता और पति के साथ रिश्तों में विवाद हो जाता था, तनाव होता था लेकिन अब सब सामान्य है। सृष्टि चक्र और आत्मा के पुर्नजन्म की कहानी जान लेने के बाद माता-पिता के शरीर छोडने पर ज्यादा दुख नहीं हुआ। परमात्म ज्ञान से हरपल हौसला मिलता रहा। किसी के प्रति दिल में कोई शिकवा नहीं है। अब सभी के प्रति रहम, दया का भाव आता है।

ब्लड प्रेशर की दवा भी बंद हो गई-

राजयोग मेडिटेशन और परमात्मा के ज्ञान का ही कमाल है कि पिछले सात माह से मेरी ब्लड प्रेशर की दवाई भी बंद हो गई है। चेकअप कराने पर सब सामान्य आता है। पहले मैं तनाव लेती थी लेकिन अब सब प्यारे शिव बाबा को सौंप देती हूं। ड्रामा कल्याणकारी है। हम गीता में पढ़ते थे कि कहां हैं भगवान। अब भगवान स्वयं आकर हमें पढ़ा रहे हैं।

मानसिक स्थिति से जुड़ी है बीमारी-

मेरा मानना है कि बीमारी मानसिक स्थिति से जुड़ी है। जब मैंने राजयोग में अभ्यास किया कि भगवान हर पल मेरे साथ हैं और उनकी शक्तियां आ रहीं हैं, इसका नतीजा यह रहा कि मुझे चौथी कीमो में किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं हुई। कीमो के दौरान मैंने मन ही मन थॉट्स किए कि मेरी अंदर अमृत आ रहा है। मैं बिल्कुल ठीक हूं। मुझे कुछ हो ही नहीं सकता है। आज बीमारियों के बढने की वजह हमारी लाइफस्टाइल है। बहुत ज्यादा कमाने और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ से ज्यादा बीमारियां हो रही हैं। मेरा अनुभव है कि राजयोग के अभ्यास से कोई समस्या, समस्या नहीं रहती है।

ब्रह्माकुमारीज़ लखनऊ : आत्मनिर्भर किसान अभियान का समापन

20 दिन में 300 गांव में पहुंचा अभियान, 30 हजार किसानों को दिया यौगिक खेती का संदेश

शिव आमंत्रण, लखनऊ (उप्र)। ब्रह्माकुमारी के कृषि एवं ग्राम विकास विभाग द्वारा 27 नवंबर से जारी आत्मनिर्भर किसान अभियान का लखनऊ के गुलजार उपवन में समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में उप्र शासन के अपर मुख्य सचिव डॉ. रजनीश दुबे ने कहा कि ऐसे अभियानों से किसानों को नई राह मिलेगी।

कृषि विभाग में सहायक निदेशक बद्री विशाल तिवारी ने कहा कि 27 नवंबर 2022 को कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कृषि भवन से अभियान का शुभारंभ किया। जो लगभग 20 दिन चला। इस दौरान 300 से अधिक गांव में जाकर 30,000 से अधिक किसानों से व्यक्तिगत संपर्क करते हुए उन्हें आत्मनिर्भरता के लिए प्राकृतिक योगिक कृषि अपनाने का संदेश दिया। किसानों की आर्थिक सामाजिक और मानसिक स्थिति सुधारने के लिए अभियान में अनुभवी सदस्यों ने राजयोग और यौगिक खेती की विधि गांव-गांव घर-घर जाकर सिखाई।

दुग्ध विकास के अपर मुख्य सचिव डॉ. रजनीश दुबे, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके राधा दीदी, बीके इंदिरा दीदी, बीके मंजू दीदी और प्रयागराज से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी संगीता दीदी ने अपनी शुभकामनाएं दीं।

परमात्मा जीवनदाता है तो किसान अन्नदाता

शिव आमंत्रण, मोकामा/बिहार। मोकामा प्रखंड के किसान भवन में ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके निशा ने सभी को रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव और जैविक तथा शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बताया। जैसे परमात्मा जीवनदाता है ठीक उसी तरह किसान अन्नदाता भी हमारे जीवन में जीवनदाता की तरह ही हैं।

इस मौके पर प्रखंड कृषि पदाधिकारी मोकामा शिव कुमार सिंह, कृषि समन्वयक अर्चना कुमारी, किसान सलाहकार संदीप कुमार,अनिल कुमार, रणवीर सिंह,रघुनाथ प्रसाद यादव, डेटा एंट्री ऑपरेटर संजय कुमार, टाल फार्मर प्रोड्यूसर कपनी लिमिटेड के निदेशक आनंद मुरारी जी, बिहारी फर्मस के सीइओ अमेश विशाल, बीके पवन, बीके नमन आदि मौजूद रहे।

शुद्ध व स्वस्थ जीवन का लाभ हमें एवं हमारे देशवासियों को मिल सके

शिव आमंत्रण, खजुराहो (मप्र)। राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष में ग्राम हकीमपुरा में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके बसंत लाल ने कहा कि यह विश्व विद्यालय एक अनोखा विश्व विद्यालय है जहां पर आध्यात्मिक पढ़ाई के माध्यम से हमारे जीवन में एक महान परिवर्तन आता हैं। जिसका अनुभव मेरा स्वयं का परिवर्तित जीवन हैं। बीके नीरजा ने कहा कि संस्था द्वारा सिखाई जा रही यौगिक खेती का भी उपयोग करें, जिससे कम खर्च में अधिक फसल उत्पन्न हो सकें एवं शुद्ध व स्वस्थ जीवन का लाभ हमें एवं हमारे देशवासियों को मिल सके। इस दौरान सभी किसान भाइयों को यौगिक खेती के बारे में भी बताया गया।

युवा प्रभाग : राष्ट्रीय युवा दिवस पर कुरवाई में सम्मान समारोह आयोजित

ध्यान और योग के लिए भी कुछ समय निकालें

कुरवाई/मंडी बामोरा। ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग की ओर से स्वामी विवेकानंद की 160वीं जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। शासकीय महाविद्यालय कुरवाई में आयोजित समारोह में जिला स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता, उपविजेता रहे छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। जन अभियान परिषद के नशा मुक्ति अभियान में जुटे युवा कार्यकर्ताओं को भी सम्मान पत्र प्रदान किए गए। बीना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज ने कहा कि युवा सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ तो जीवन में सफलता की नई ऊंचाइयों को छू सकता है।

मंडी बामोरा सेवाकेंद्र प्रभारी एवं युवा प्रभाग की बीना क्षेत्रीय समन्वयक बीके जानकी ने कहा कि युवाओं पर तो परमात्मा को भी नाज होता है। समाज के हर वर्ग की आस युवाओं पर होती है। युवा अवस्था में लिए गए सही निर्णय हमारे पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। इसलिए युवा अपनी सोच को विराट, विशाल, सकारात्मक बनाएं और आध्यात्म को अपनाएं। स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से सीख लें। अपने कर्मों पर ध्यान दें क्योंकि हमारे कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं। प्राचार्य एके पारीक, जन अभियान परिषद की ब्लॉक समन्वयक सीमा व्यास, समाजसेवी जितेंद्र सिंह राजपूत, अधिवक्ता ओम प्रकाश आर्य मुख्य रूप से मौजूद रहे।

सार समाचार

देश के समृद्धि का रास्ता गांव के खेत खलिहानों से ही गुजर कर जाता है

शिव आमंत्रण, जबलपुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज शिव स्मृति भवन भंवरताल, नेपियर टाउन में राष्ट्रीय किसान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके भावना ने कहा कि देश के समृद्धि का रास्ता गांव के खेत खलिहानों से ही गुजर कर जाता है। भारत देश गांव में ही बसता है। वर्तमान समय आवश्यकता है कि समस्त किसान भाई-बहनें पुनः अपनी सनातन संस्कृति को पहचान कर अपने आंतरिक मूल्यों को जागृत करके अपनी स्थिति को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करें। जवाहरलाल कृषि विश्व विद्यालय के कीट शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एसबी दास ने कीटों से होने वाले नुकसान के विषय में जागरूक किया। बीके वर्षा ने राजयोग की गहन अनुभूति कराई। भारत कृषक समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष केके अग्रवाल, डॉ एसके पांडे ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके संतोष चक्रवर्ती ने किया।

खाद्यान्न में हो रहा राजयोग का प्रयोग

शिव आमंत्रण, बहल/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों का सम्मान समारोह रखा गया। खंड कृषि अधिकारी डॉ. संजीव कुमार ने किसानों को कई जानकारी दी। खंड विकास अधिकारी डॉ. जय कुमार भौरिया थे। सेवाकेंद्र संचालिका बीके शकुन्तला ने कहा कि सकारात्मक विचारों का प्रभाव प्रकृति को भी बहुत प्रभावित करता है। आज खाद्यान्न की गुणवत्ता को सुधारने के लिए राजयोग मेडिटेशन का प्रयोग हजारों किसान कर रहे है। बहल और ढिगावा क्षेत्र के शाश्वत खेती करने वाले 15 महिला और पुरुष किसानों को सम्मानित किया गया। बीके पूनम बहन ने मेडिटेशन का अभ्यास कराया।

सभी को यौगिक खेती सीखना चाहिए

शिव आमंत्रण, सादाबाद (उप्र)। किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि उप्र कृषि समृद्धि आयोग सदस्य रिसी जैसवाल ने कहा कि बमैंने खुद धरातल पर माउंट आबू मुख्यालय में जाकर देखा कि कैसे बहुत बड़े स्तर पर यौगिक खेती की जा रही है। बीके भावना ने कहा कि जैसा खाएंगे अन्न, वैसा बनेगा मन। अन्न का मन पर विशेष प्रभाव पड़ता। तहसीलदार कीर्ति सिंह, भाजपा किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष धर्मेंद्र गौतम, बीके सीमा, कृषि विभाग से विजय गौतम, समाजसेवी गेंदालाल रावत सहित सादाबाद क्षेत्र की 51 ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधान मुख्य रूप से मौजूद रहे।

जैविक खेती कर रहे किसानों का सम्मान

कादमा/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के रामबास स्थित पाठशाला में राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष में किसान सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें बीके वसुधा ने जैविक-यौगिक खेती के बारे में विस्तार से बताया। जैविक खेती करने वाले किसान राज कपूर लांबा, राजेश शर्मा, सोमवीर लांबा, राजेश पिचोपा, बबलू भालोठिया, ईश्वर पूर्व मैनेजर को सम्मानित किया गया। सरपंच सुधीर शर्मा, प्राचार्य ललित भारद्वाज ने भी विचार व्यक्त किए।

गुवाहाटी में प्रशासक सेवा प्रभाग का एक दिवसीय प्रशासक सम्मेलन आयोजित

शांत-स्थिर मन से निर्णय लेने से अधिक लोगों के जीवन में खुशहाली ला सकते हैं: मुख्य सचिव

शिव आमंत्रण, गुवाहाटी/आसाम। ब्रह्माकुमारीज के गुवाहाटी विश्व शांति भवन सेवाकेंद्र द्वारा प्रशासक सेवा प्रभाग का एक दिवसीय प्रशासक सम्मेलन आयोजित किया गया। आध्यात्मिकता के द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता विषय पर आयोजित सम्मेलन में असम सरकार के मुख्य सचिव पवन कुमार बोरथाकुर ने कहा कि प्रशासकीय क्षेत्र में लिए गए निर्णय का आमजन पर बहुत असर होता है। जिम्मेवारी के साथ त्वरित निर्णय लिए जाने से, नियमों एवं मर्यादाओं का पालन करते हुए निर्णय लेने से बहुतों का हित होता हैं। सकारात्मकता से लिए गए निर्णय उसे प्रशासक बहुतों के जीवन में खुशहाली ला सकता है। आत्म सम्मान और विश्व एक परिवार की भावना से प्रशासन में पारदर्शिता आएगी। शांत और स्थिर मन से निर्णय लेने से अधिकतम लोगों के जीवन में खुशहाली ला सकते हैं।

प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने से प्रशासन में उत्कृष्टता आती है, हम पहले स्व के शासक बनें। अपने मन में निहित खुद की शक्तियों के खजाने को पहचानें और व्यापक जनहित में कल्याणकारी और पारदर्शी निर्णय लें तो समाज में लोगों का जीवन, शांति और खुशी से संपन्न बना सकते हैं।

उप्र सरकार के पूर्व सचिव सीताराम मीणा ने कहा कि अपने लंबे प्रशासनिक कार्यकाल के दौरान राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास किया। इससे जहां स्वयं का आंतरिक सशक्तिकरण होता है। वहीं मन की सोच, विचार की शक्ति व्यापक होती है। पारदर्शी व सहानुभूति पूर्वक हमें नीतियां बनाने व उनका अमल सुनिश्चित करने की स्पष्ट दिशा मिलती है।

हरियाणा से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके बिंदु दीदी, मुख्यालय संयोजक बीके हरीश, बीके विधात्री ने भी विचार व्यक्त किए। नलबाड़ी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जोनाली ने आभार व्यक्त किया। बीके हुसैन ने संचालन किया। बीके मौसमी ने स्वागत भाषण दिया।

सेवाकेंद्र पर रक्तदान शिविर आयोजित

शिव आमंत्रण, खंडवा/मप्र। ब्रह्माकुमारीज के इंदौर जोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके कमला दीदीजी के अव्यक्त आरोहण एवं पूर्व निदेशक राजयोगी ओमप्रकाश भाईजी की सातवीं पुण्यतिथि पर भाग्योदय भवन, आनंद नगर में श्रद्धांजली का आयोजन किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शक्ति दीदी ने कहा कि संस्था द्वारा ज्ञान-ध्यान के साथ सामाजिक क्षेत्र में भी लोगों की सेवा की जा रही है। संस्था बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की मिसाल है। इसमें संस्था से जुड़े भाई-बहनों ने रक्तदान किया। कार्यक्रम में महापौर अमृता अमर यादव, जिला पंचायत अध्यक्षा कंचन मुकेश तन्वे, निगम अध्यक्ष अनिल विश्वकर्मा, लायंस क्लब के डिस्ट्रिक्ट चेयरमेन नारायण बाहेती, लायंस रोटी सेवाकेंद्र के चेयरमेन गाँधी प्रसाद गदले, सिन्धी सेवा मंडली के अध्यक्ष गेहीराम सीतलानी मुख्य रूप से मौजूद रहे।

परमात्मा सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च, सर्वमान्य, सर्वज्ञ हैं, सर्वव्यापी नहीं

शिव आमंत्रण, पोरसा (मप्र)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र सुख शांति भवन, सब्जी मंडी रोड की पाठशाला रामनगर की ओर से श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञानयज्ञ का आयोजन मोती पैलेस पर किया गया है। इसमें कथावाचक राजयोगिनी बीके कृष्णा ने कहा कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, सर्वश्रेष्ठ हैं। परमात्मा निराकार है, सर्वोच्च है, सर्वमान्य है, हम जिस शिवलिंग की पूजा करते हैं उसमें त्रिपुंड के बीच जो बिंदु है वही उस निराकार परमात्मा का सत्य स्वरूप है हम सभी को उसी सत्य स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। आत्म साक्षात्कार करने वाला ही समझ पाता है कि परमात्मा किस अनुरागी में अवतरित होते हैं? भगवान कहते हैं हे पार्थ, जो मुझे जितने लगन से और जैसे भजन करते हैं अर्थात याद करते हैं मैं भी उनको उतना ही सहयोग देता हूं। परमात्मा की शक्ति सारे संसार की आत्माओं के लिए है क्योंकि सभी आत्मा, परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा कभी भेदभाव नहीं कर सकता है। मुख्य अतिथि के रूप में बालाजी पेट्रोल पंप के संचालक प्रकाश चांदिल, रोटरी क्लब के उपाध्यक्ष आकाश चांदिल जी उपस्थित रहे।

उदयपुर : संगीत संध्या में आध्यात्मिक गीतों से बांधा समां, मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

ध्यान और योग के लिए भी कुछ समय निकालें

शिव आमंत्रण, उदयपुर/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज मोती मगरी स्कीम सेवाकेंद्र की ओर से नगर निगम के सुखाडिया रंगमंच में संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति संगीत संध्या का आयोजन किया गया। इसमें बॉलीवुड के प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती एवं सुखीराम मंडा ने परमात्मा स्मृति के सुंदर गीत गाकर समां बांध दिया। साथ ही माउंट आबू से पधारे राजयोगी बीके सतीश भाई, बीके नितिन भाई ने गीतों से माहौल को परमात्म अनुभूतिमय बना दिया। कलेक्टर ताराचंद मीना, पूर्व महापौर चंद्र सिंह कोठारी, एनसीसी के ग्रुप कमांडर कर्नल भास्कर, डिप्टी मेयर पारस सिंघवी, राजस्थान विद्यापीठ के वाइस चांसलर, वंडर सीमेंट के डायरेक्टर, सिंधी समाज के अध्यक्ष प्रताप राय चुग ने भी विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र संचालिका बीके रीटा दीदी ने ईश्वरीय अनुभूति कराई।

सार समाचार

ग्वालियर के बीके प्रहलाद को नई दुनिया गौरव सम्मान-2022 से नवाजा

शिव आमंत्रण, इंदौर/ग्वालियर (मप्र)। इंदौर के प्रसिद्ध होटल रेडिसन में नई दुनिया द्वारा नई दुनिया गौरव सम्मान-2022 आयोजित किया गया। इसमें ग्वालियर के ब्रह्माकुमार मोटिवेशनल स्पीकर प्रहलाद भाई को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में वर्चुअल रूप से शामिल हुए केंद्रीय कृषि एवं कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, मंत्री ओपीएस भदौरिया, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक अमित सांघी, नई दुनिया के यूनिट हेड दिनेश उपाध्याय, संपादक वीरेंद्र तिवारी एवं मार्केटिंग हेड उपस्थित रहे।

कैदियों को पढ़ाया कर्मों की गुह्य गति का पाठ

शिव आमंत्रण, बीरगंज/नेपाल। जिला जेल में बंदियों के लिए मोटिवेशनल वर्कशॉप आयोजित की गई। इसमें माउंट आबू से आए बीके भगवान भाई ने कहा कि हमारे मन में पैदा होने वाले विचार कर्म से पहले आते हैं। यदि आप किसी व्यक्ति से अच्छा व्यवहार चाहते हैं और उसे बदलना चाहते हैं, तो उसे दुआएं दो, उसके प्रति अच्छा सोचें, तो वह भी आपको दुआ देगा। जेलर मदन घिमरे ने कहा कि आप जैसा सोचोगे वैसा ही बन जाओगे। सुरक्षा प्रमुख शिवराज मोहोतो ने कहा कि हमें सदा अच्छा सोचना चाहिए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सविता बहन ने कहा कि जेल से छूटने के बाद अच्छे नागरिक की तरह जीवन यापन करें। बीके गोवर्धन ने भी विचार व्यक्त किए।

प्रसिद्ध एक्टर यशपाल शर्मा को सौगात दी

शिव आमंत्रण, सोनीपत/हरियाणा। सारथी संस्था द्वारा सोनीपत के शिव शक्ति स्कूल में सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सोनीपत सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रमोद दीदी को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस दौरान बीके प्रमोद दीदी ने यशपाल शर्मा को सौगात प्रदान कर सम्मानित किया।

हॉल में प्रवेश करने पर स्वयं व परमात्मा की अनुभूति होने लगती है: स्वामीजी

नवापारा-राजिम, छत्तीसगढ़। जन जन को जन कल्याण का कार्य करने हेतु ब्रह्माकुमारी द्वारा नवनिर्मित ग्लोबल पीस हाल शहरवासियों को आध्यात्मिक पथ, भटके हुए राही को सच्ची राह दिखाने लाइट हाउस का कार्य करेगा। इस हाल में प्रवेश करने वाला हर मानव को स्वयं की सत्य अनुभूति और परमात्मा अनुभूति होने लगती है। यह विचार त्रिमूर्ति भवन मैं पधारे कनिष्ठ शंकराचार्य, राम जन्मभूमि न्यास के उपाध्यक्ष ,विश्व हिंदू परिषद प्रचार समिति के अध्यक्ष स्वामी आत्मानंद सरस्वती ने व्यक्त किए। इस मौके पर इंदौर से पधारे धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर ब्रह्माकुमार नारायण भाई, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ब्रह्माकुमारी प्रिया बहन ने किया।

ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

भौतिकवादी सोच से बुद्धि जड़ हो गई है, आध्यात्मिक चिंतन से ही बुद्धि की चेतना को जगा सकते हैं: गुप्ता

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम/हरियाणा। मूल्य केवल कहने मात्र से नहीं बल्कि चिंतन से जागृत होते हैं। इसके लिए लंबे समय तक सत्संग की आवश्यकता है। उक्त विचार उत्तराखण्ड, उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश सर्वेश गुप्ता ने व्यक्त किए। जस्टिस गुप्ता, ब्रह्माकुमारीज के गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल हुए। समापन सत्र में विधि व्यवसाय में मूल्यों का समावेश विषय पर उन्होंने सभा को संबोधित किया। जस्टिस गुप्ता ने कहा कि भौतिकवादी सोच के कारण बुद्धि आज जड़ हो गई है। आध्यात्मिक चिंतन ही बुद्धि की चेतना को जगा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट अशोक शर्मा ने कहा कि कानून भी समाज में शांति और प्रेम स्थापित करने के लिए ही बनते हैं। लॉ शब्द भी कहीं न कहीं लव से ही शुरू हुआ है। प्रेम का सच्चा भाव ईश्वर द्वारा प्राप्त होता है। झालावाड़, लॉ कॉलेज के पूर्व प्राचार्य बाबूलाल यादव ने कहा कि आध्यात्मिकता के बगैर विश्व परिवर्तन संभव नहीं है। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि हम सब परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं। परमात्मा दया और करुणा के सागर हैं। उनके बच्चे भी मास्टर सागर होने चाहिए। ज्यूरिस्ट विंग की उपाध्यक्ष बीके पुष्पा, माउंट आबू से बीके लता एवं दिल्ली से सीनियर एडवोकेट मुकेश आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। भरतपुर से बीके प्रवीणा ने राजयोग का अभ्यास कराया। संचालन बीके मनीष ने किया। देश के विभिन्न प्रांतों से आए न्यायविदों ने हिस्सा लिया।

राजयोग के अभ्यास से जवानों में आया परिवर्तनः कमाडेंट वृक्ष

शिव आमंत्रण, सारनाथ/उप्र। सारनाथ स्थित क्षेत्रीय मुख्यालय के सभागार में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी बीके सुरेंद्र ने कहा कि अपने जीवन में नवीन चेतना का विकास करते हुए स्वयं को सकारात्मक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना ही नववर्ष का संदेश है। सीआरपीएफ 95वीं बटालियन के कमाण्डेंट अनिल कुमार वृक्ष ने जवानों के बीच दिए गए राजयोग अनुभूति एवं तनावमुक्ति सत्र से जवानों में आए परिवर्तन के लिए संस्था की सराहना की। एनडीआरएफ के कमाण्डेंट मनोज कुमार शर्मा, क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेंद्र, जिला उद्यान अधिकारी ममता यादव, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एसपी यादव, डॉ. केपी जायसवाल, डॉ. एमके मिश्रा, डॉ. योगेश्वर सिंह, सहायक कमाण्डेंट विनोद कुमार सिंह, बीके राधिका, बीके तापोशी, बीके विपिन ने भी विचार व्यक्त किए।

कवियों ने आध्यात्मिक काव्यपाठ से बांधा समां

शिव आमंत्रण, मुरसान (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ शिव अनुभूति भवन में कवियों के मध्य आध्यात्मिक काव्य सरिता की धारा बही। दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। बीके भावना ने कहा धर्म ही धारणा है और धारणा ही धर्म है। ईश्वरीय ज्ञान की बातों को आत्मसात करना ही सच्चा धर्म है। धौलपुर से आए लेखक व कवि डॉ. पवित्र शर्मा ने परमेश्वर रहकर मौन सभी पर करुणा दया बरसाया.. से समां बांध दिया। आशु कवि अनिल बौहरे, कवि श्याम बाबू चिंतन, सादाबाद से कवि जयप्रकाश पचौरी, कवि चांद हुसैन, सादाबाद से कवियित्री मंजू शर्मा, रामबाबू पिप्पल ने भी कविता पाठ से मंत्रमुग्ध कर दिया। शाखा प्रबंधक शंभू दयाल, कवि रोशनलाल वर्मा, सादाबाद से कवि नूर मोहम्मद नूर ने कविता पाठ किया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बबीता ने सभी का स्वागत किया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से ब्रह्माकुमारीज की प्रतिनिधिमंडल ने की मुलाकात

राष्ट्रपति बोलीं- इंदौर में शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर बनने से लोगों को मिलेगा आध्यात्म का संदेश

शिव आमंत्रण, इंदौर-मप्र। तीन दिवसीय प्रवासी भारतीय सम्मेलन के समापन समारोह में पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर के बनने से लोगों को राजयोग और आध्यात्म का संदेश मिल सकेगा। लोगों को आनंद के पल बिताने के लिए एक नया शांति का केंद्र साबित होगा। हम सभी शरीर का तो ध्यान रखते हैं लेकिन मन का ध्यान रखना भूल जाते हैं। जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी ने राष्ट्रपति को भविष्य में रिट्रीट सेंटर पधारने का निमंत्रण दिया।

संस्थान की सामाजिक सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया। प्रतिनिधि मंडल में बीके सुनीता दीदी, बीके रेवती दीदी, मप्र हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश बीडी राठी, समाजसेवी सुरेश गुप्ता मौजूद रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

भाव और भावना

शिव आमंत्रण, आबू रोड। भाव विचारों का वह प्रतिबिंब है जो हमारे लिए किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान के प्रति दृष्टिकोण का निर्माण करता है। विचारों की एक लंबी शृंखला, निरंतरता और धारणा के आधार पर भाव का जन्म होता है। जब भाव अपने पूर्ण रूप को प्राप्त कर लेता है तो वह भावना में तब्दील हो जाता है। विचार, भाव और भावनाएं एकाकार हो जाती हैं तो महान व्यक्तित्व आकार लेता है। किसी कर्म का परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि हमने उसे किस भाव और भावना के साथ पूरा किया है। यदि सेवा में भाव और भावना नहीं है तो वह सेवा, सेवा नहीं मात्र एक कर्म है। ऐसी सेवा के पुण्य फल से हम वंचित रह जाते हैं। जब किसी चीज के प्रति एक समान दृष्टिकोण लंबे काल तक रहता है तो एक अरसे के बाद वही भाव, भावना के रूप में तब्दील हो जाता है। हर जीव के प्रति दया और करुणा का भाव ही हमारा सच्चा धर्म है। हमारा मुस्कुराता हुआ चेहरा देखकर अनजान शख्स भी मुस्कुरा देता है। क्योंकि वह हमारी खुशी की भावनाओं के आधार पर खुशी महसूस करता है।

ऐसा क्यों होता है कि बिना वजह किसी अनजान व्यक्ति से मिलने पर खुशी, आनंद और संतुष्टि की महसूसता होती है, जबकि कई बार अपनो के मिलने पर मन में द्वेष, ईष्या, नफरत और घृणा के भाव आ जाते हैं। जब लंबे काल तक हम किसी व्यक्ति विशेष के प्रति एक समान तरह के विचार- नकारात्मक या सकारात्मक रखते हैं तो वह भाव में बदल जाते हैं। हमारा यही भाव सामने वाले के प्रति हमारे व्यवहार, आदर और सम्मान के रूप में प्रतिफलित होता है। दूसरी ओर यदि किसी अनजान शख्स जिससे हम कभी मिले ही नहीं हैं लेकिन उसके बारे में पहले से ही बहुत महिमा और प्रशंसा सुन रखी हो तो उससे मिलने पर हमारा पहले से ही भाव सम्मान और आदर का रहता है। क्योंकि हमने पहले से एक इमेज तैयार कर रखी होती है। मुलाकात के बाद ही उसकी सोच और भाव के बाद आगे के लिए हमारी भावना आकार लेती है।

परफ्यूम की तरह होते हैं विचार-

कई बार हम सामने वाले व्यक्ति से कहते कुछ और हैं और वह समझता कुछ और है। फिर हमें कहना पड़ता है कि मेरे कहने का भाव यह नहीं था। आपने गलत समझ लिया। दरअसल, ऐसी स्थिति इसलिए बनती है कि जब हम बात कर रहे होते हैं तो हमारा रवैया या व्यवहार दो तरह का होता है। हमारे मन में उसके प्रति वैसा भाव नहीं होता है जैसा कि हम शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं अर्थात् यदि विचारों-मन में नकारात्मक भाव लिए हैं और बातें सकारात्मक भाव से कर रहे हैं तो ऐसे में उसे आंतरिक भाव की स्वाभाविक रूप से महसूसता हो जाती है। फिर हमारे तमाम प्रयासों या समझाने के बाद भी वह संतुष्ट नहीं हो पाता है। विचार तो परफ्यूम की तरह होते हैं जहां हम जाते हैं तो उस स्थान और व्यक्ति के पास अपनी महक छोड़ आते हैं। हमारे आसपास पांच फीट के दायरे में हमारा ओरा (आभामंडल) भी चलता है जो इस दायरे में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है। परमात्मा कहते हैं हमारे विचार ऐसे हों कि हम जहां जाएं तो खुद तो महकें हीं साथ ही उसकी सुगंध का एहसास दूसरों को भी हो।

भावना का भाड़ा देते हैं भगवान-

हम बचपन से सुनते आए हैं कि भगवान, ईश्वर तो भाव के भूखे हैं, वह हमें भावना का भाड़ा अर्थात् प्रतिफल देते हैं। ध्यान की अवस्था में हम जिस भावना और भाव के साथ परमात्मा को याद करते हैं वही हमारी ध्यान की गहराई, परमात्मा के साथ संबंध तय करती है। इसमें समय, काल, परिस्थितियां कोई मायने नहीं रखतीं। भावना का ही परिणाम है कि एक भक्त पत्थर की मूर्ति में अपने आराध्य की छवि महसूस करता है और उसी भाव और भावना का भाड़े के रूप में आराध्य देव उसकी मनोकामना भी पूर्ण करते हैं। चूंकि भावनाएं हमारे हृदय से जुड़ीं होती हैं और हृदय की आवाज ईश्वर तक जाती है।

परमात्मा हमें शुभभावना-शुभकामना संपन्न रहना सिखाते हैं-

लंबे काल तक जब हमारे विचारों, मन और बुद्धि में सर्व के कल्याण का भाव अंतर्मन की धारा में निरझर झरने की तरह बहने लगता हैं तो हमारे व्यक्तित्व में स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ, सकारात्मक और शुभ भाव का जन्म हो जाता है। तमाम अवरोधों के बाद भी जब यह भाव निरंतर बना रहता है तो हम शुभभावना से संपन्न आभामंडल के स्वामी बन जाते हैं। शुभभावना से संपन्न व्यक्तित्व परफ्यूम की तरह खुशबू प्रदान करता है। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखायÓ का भाव ही अंतस में शुभकामना का रूप ले लेता है। परमपिता परमात्मा का भी सर्व मनुष्य आत्माओं के प्रति यही शुभ संदेश है कि मेरे लाडले बच्चों! शुभभावना-शुभकामना संपन्न बनो। आपकी शुभभावना सर्व के कल्याण का द्वार खोलेगी। भले सामने वाले का व्यवहार, दृष्टिकोण कैसा भी हो लेकिन आपके शुभभावना से संपन्न संकल्प, बोल और व्यवहार हो। संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन होगा।

हर एक संकल्प वाइब्रेशन है इसलिए श्रेष्ठ संकल्प ही करें

हमारी सोच के अनुसार ही दुनिया में हमें हर चीज नजर आती है

मन मंदिर को संवारें, जीवन अपने आप संवर जाएगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। सुबह मेरा एनर्जी सर्कल व्हाइट था, रात को भी मेरा सर्कल व्हाइट होना चाहिए। सारा दिन में सबके साथ रहते हु अटेंशन किसी और पर नहीं, अटेंशन अपने सर्कल पर हो। रोग में सिर्फ मेरी दवा इलाज नहीं करती, मेरा सर्कल भी उसका इलाज का हिस्सा है। व्हाइट एनर्जी हील कर सकती है और इसका उल्टा हीलिंग को कम भी कर सकता है। तो व्हाइट सर्कल महसूस करते रहना हमेशा। क्योंकि हम जिससे मिलें उस पर भी सकारात्मक असर होगा। अब अगर मैंने गुस्सा कर दिया तो उस वाइट सर्कल का क्या होगा? वाइट सर्कल डार्क होने लगेगा तो ये सब छोटी-छोटी चीजें हैं जो मेरे वाइट सर्कल को नकारात्मकता की तरफ ले जाती हैं। फिर मैं उसको व्हाइट करने के लिए कुछ न करूं तो कुछ समय के बाद मैं डार्क कलर्स के साथ रहना शुरू कर देता हूं और फिर मैं यकीन करना शुरू कर देता हूं कि मेरा नेचर ही ऐसा है। जो आत्मा हाई फ्रीक्वेंसी पर होगी वो लोअर फ्रीक्वेंसी की चीज उस तक टच नहीं करती ऐसा रोज कर सकते हैं। खुद को प्रोटेक्ट करें, अपने घर को प्रोटेक्ट करें।

उदाहरण के तौर पर- मैं उठी, फ़ोन लिया, टेबल पर रखा, एक संकल्प मैं करती हूं। ये फ़ोन छूट ना जाए मेरे से, कोई उठा ना ले। ये भी एक एनर्जी है। ये क्या करेगी वाइब्रेशन को? ये उसके होने के चांसेस कई गुना ज़्यादा बढ़ा देगी क्योंकि मैंने उसमें एनर्जी डाल दी है कोई आपको उठाएगा। फिर बाद में हम कहते हैं मुझे मालूम था कोई तो उठा लेगा। मुझे मालूम है, मुझे मालूम था इसलिए कोई ने नहीं उठाया लेकिन मैंने उस उठाने को अपने जीवन में इनवाइट किया है। जो सोचते हैं मैं भी बीमार न हो जाऊं, वो ज्यादा बीमार हो जाते हैं।

हर कर्म में परमात्मा को हिस्सा बनाएं-

हर एक संकल्प एक वाइब्रेशन है। तो हर चीज में खाना खा रहे हैं, पानी पी रहे हैं, काम कर रहे हैं, मीटिंग कर रहे हैं परमात्मा को उसका हिस्सा बनाएं। आप किसी से मिलने वाले हैं जिससे पिछली बार कुछ ठीक नहीं हुआ था, अब क्या होता है जब हम अब मिलने जा रहे हैं तो कौन सी संकल्प क्रियेट कर देते हैं, इस बार भी कुछ गड़बड़ ना हो जाए। एक प्रयोग करके देखें। अधिकांश घरों में ऑक्सीमीटर होगा। आपको जिस समय गुस्सा आए, उसी समय ऑक्सीमीटर लगाएं और देखें कि गुस्सा करने के बाद आपकी पल्सरेट कितनी होती है, ऑक्सीजन सेचुरेशन कितना पहुंचता है। क्रोध कोई सामान्य चीज नहीं है, इसलिए मशीन में भी उसकी रीडिंग मिल जाएगी।

संस्कार अपने आप काम करता है-

हम मन में कुछ बुनते हुए, रास्ते पर ध्यान दिए बिना एक ही रास्ते से घर से स्कूल और स्कूल से घर आ जाते हैं। यहां हमारा संस्कार गाड़ी चला रहा था और मन कुछ और सोच रहा था। इसी तरह से पढ़ाना हमारा संस्कार है। क्योंकि हम जो वो विषय, जो अध्याय पढ़ाते हैं तो वो हमारे संस्कार के अंदर फिक्स हो जाता है। हमारा दिमाग कुछ और सोचते हुए भी पढ़ा सकता है। यहां तक कि दुखी मनोस्थिति में भी। लेकिन अगर हमारी एनर्जी में कमी आ रही है, तो 30 मिनट में हमारी बैटरी, दूसरे की बैटरी को भी डाउन कर देगी। पर यह किसी को पता नहीं चलता। टीचर की एनर्जी फील्ड में आए वो बच्चे एक के बाद एक क्लास अटेंड करने के बाद शाम को बुझे-बुझे घर पहुंचते हैं। अब घर में दो बैटरी आती हैं। वो बैटरियां भी सारा दिन थककर कहती हैं तनाव सामान्य है,

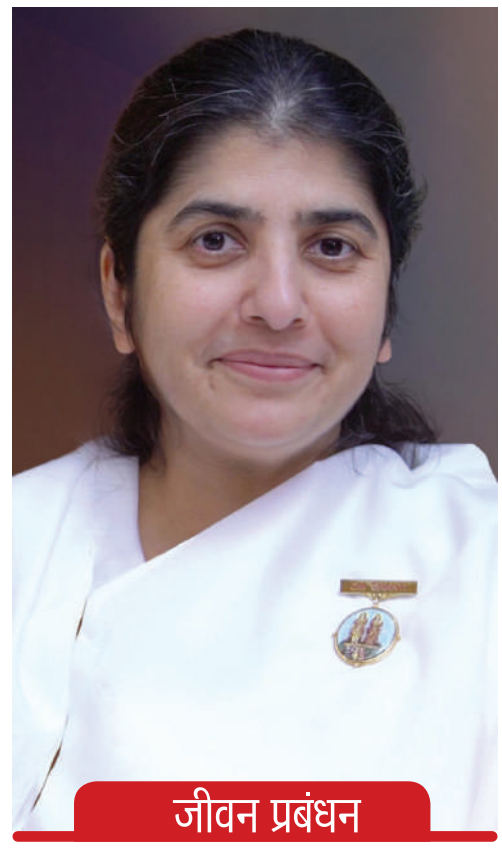

जीवन प्रबंधन

ब्रह्माकुमारी शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर एवं ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

ईर्ष्या भी सामान्य है, गुस्सा नॉर्मल है, प्रतिस्पर्धा सामान्य है। वो दो बैटरी हैं उनके मम्मी-पापा। अब आप जरा सोचिए कि क्या स्थिति होने वाली है। सवाल यह नहीं होना चाहिए कि आजकल के बच्चे ऐसे क्यों हैं या वो तनाव में क्यों हैं, क्यों जल्दी प्रतिक्रिया कर रहे हैं या क्यों उनमें खुदकुशी के विचार आ रहे हैं। दरअसल बच्चों की बैटरी डिस्चार्ज हो चुकी है। हमें सिर्फ एक साधारण चीज करनी है, अपने मन का ध्यान रखना शुरू करना है।

आज के दिन से हमें ये पक्का करना है कि मुझे सिर्फ सब्जेक्ट नहीं पढ़ाना है, वो तो हम पढ़ा रहे हैं, वो हमारा रोल है और मन का ध्यान रखना ये हमारी जिम्मेदारी है। आज बच्चों में एडिक्शन, डिस्ट्रक्शन ये सब है। 10 साल के बाद की परिस्थिति का आत्मा की ताकत के बिना सामना नहीं किया जा सकता है। बच्चे दुनिया के हालातों से प्रभावित होने वाले हैं। ये किसी को दिखाई नहीं देगा। हमें इसलिए बहुत ध्यान रखना है कि इनके मन को मजबूत कैसे बनाना है। जब हम तनावग्रसित होते हैं तो क्या मन में परिस्थिति जब हमारे अनुसार नहीं होती है तो हम कहते हैं तनाव सामान्य है। बच्चों को सिखाएं कि नॉर्मल क्या है। मन की सेहत पर ध्यान देने की जरूरत है। आप खुद चेक कीजिए कि क्या तनाव नॉर्मल होता है। सामान्य महसूस होता है। इसका जवाब हां भी हो सकता है! क्योंकि कोई चीज बहुत बार पैदा कर लेते हैं तो वही हमारी मानसिक अवस्था बन जाती है। लेकिन क्या वो सहज होती है, क्या हमारा शरीर उस समय अपनी सुकून वाली अवस्था में होता है। क्या हमारा बात करने का तरीका सहज-सामान्य होता है।

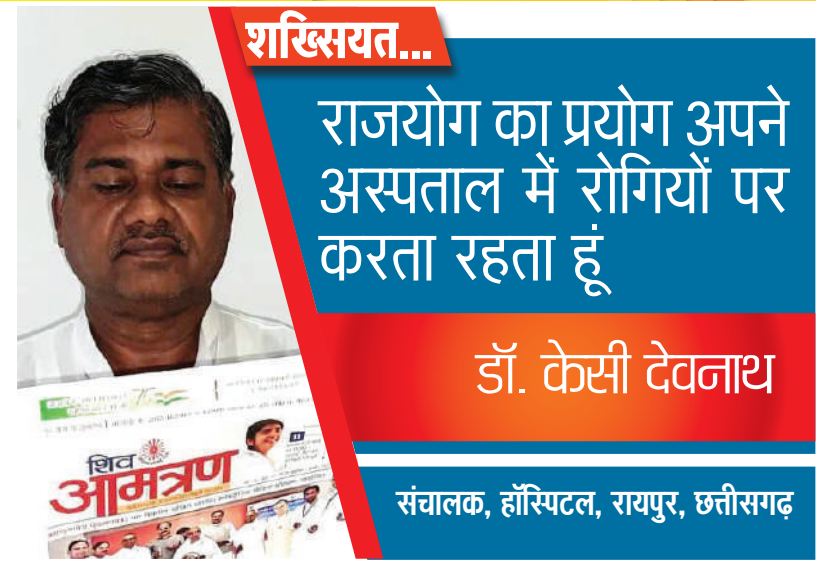

शख्सियत...

राजयोग का प्रयोग अपने अस्पताल में रोगियों पर करता रहता हूं

डॉ. केसी देवनाथ

संचालक, हॉस्पिटल, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. केसी देवनाथ ने अपने हॉस्पिटल में मरीजों के लिए मेडिटेशन रूप बनाया हुआ है।

शिव आमंत्रण, आबू रोड । व्यक्ति चाहे दुनिया की पढ़ाई कितना भी क्यों न पढ़ ले फिर भी परमात्मा के द्वारा ब्रह्माकुमारीज संस्थान में दिया जा रहा सत्य गीता ज्ञान जब तक ना समझे तब तक सब व्यर्थ ही है। विज्ञान की पढ़ाई कर लोग काफी लॉजीकल हो जाते हैं। फिर भी विज्ञान की एक सीमा है। कितना भी बड़ा डॉक्टर क्यों न हो परंतु अपना कर्म करते हुए परमात्मा पर अनजाना विश्वास करता ही है, उन्हें भी लगता है कि सबकुछ हमारे हाथ में नहीं है। दवा से इलाज तो सिर्फ निमित्त मात्र ही है। आज उनका भी रूझान राजयोग, अध्यात्म और परमात्मा की तरफ होने लगा है। इसी बात को चरितार्थ करते हुए छत्तीसगढ़ रायपुर के एक डॉक्टर केसी देवनाथ हैं जो अपने हॉस्पिटल में रोगियों को आत्मा परमात्म का ज्ञान देकर मेडिटेशन सिखा कर लाभ पहुंचा रहे हैं। शिवन आमंत्रण से खास बातचीत में उन्होंने अपना अनुभव सुनाया।

साइंटिफिक तरीके से भगवान को प्रूफ करना बहुत मुश्किल-

मेरा पिछले 30 साल से नर्सिंग होम चल रहा है। हमारे यहां आईसीयू में हार्ट के पेशेंट और डायलिसिस किडनी के पेशंट का इलाज होता है। विधिवत ज्ञान के साथ ब्रह्माकुमारी।ा द्वारा सिखाया गया राजयोग सात वर्षों से प्रयोग कर रहा हूं। प्राय: साइंस के लोग भगवान से ज़्यादा कुछ संबंध नहीं रखना चाहते, क्योंकि साइंस में जिसको हम प्रूफ़ कर सकते हैं उसी में प्राय: लोग विश्वास रखते हैं। साइंटिफिक तरीके से भगवान को प्रूफ़ करना तो बहुत मुश्किल है। बाकी हम लोगों को आत्मा परमात्मा और सृष्टि चक्र का मैसेज जरूर देते रहते हैं।

मंथन से निकलेंगी शक्तियां...

दादी गुलजार के तन में भगवान आकर के उन्हीं के मुख से गीता का ज्ञान देते हैं यह बात तो पहले अटपटा सा लगता था लेकिन जब अपने को मौका मिला प्रभु मिलन मनाने का तब मुझे यह करीब से महसूस हुआ। मैंने देखा इतनी भीड़ जहां 30 हजार से ज़्यादा लोग रहें होंगे और फिर भी पिन ड्रॉप साइलेंस। सब बैठे थे, बाबा को सुनने के लिए। मेरे अंदर भी एक उत्सुकता के साथ जिज्ञासा थी कि दादी के तन में भगवान आते हैं तो वे कैसे बोलते हैं क्या स्थिति होती है? जब दादी स्टेज पर आईं तब उनकी नजर से एक अलग सा सन्नाटा छा गया। तब मुझे आभास हुआ जरूर कोई शक्ति है। जहां मैं बैठा था, वहां स्तब्ध होकर सुना। शुरू में फ़ोकस करने में थोड़ी सी दिक्क़त हुई क्योंकि आवाज थोड़ा चेंज हो गया। बाबा ने कहा कि मुरली का चिंतन करो मंथन करो जिससे शक्तियां निकलेंगी। जिसमें पवित्रता एक ऐसी अग्नि शक्ति है जिसमें सभी बुराईयां भस्म हो जाती हैं। मैंने सोचा पवित्रता ऐसी क्या चीज है जिसमें सब बुराइयां भस्म हो जाती हैं? धीरे-धीरे मैंने इस पर अध्ययन किया और अपने ऊपर प्रयोग करना शुरू किया तब काफी लाभ मिलने लगा। उसके बाद राजयोग का प्रयोग मरीज पर भी करने लगा जिसके अद्भुत रिजल्ट देखने को मिल रहे हैं।

रोगियों से कहते हैं हम तो भगवान की रचना हैं-

हमने हॉस्पिटल में भी मेडिटेशन के लिए शिवबाबा का कमरा बनाया हुआ है। हम रोगियों से कहते हैं हम तो भगवान की रचना हैं आपको ठीक करने के लिए भरसक कोशिश ही कर सकते हैं लेकिन परमात्मा सुप्रीम वैद्यनाथ सबसे बड़ा डॉक्टर है जो आपको सौ फीसदी ठीक कर सकता है। हम लोगों से अपील करते रहते हैं कि आप में जो बुराइयां हैं एक-एक करके परमात्मा पर अगर समर्पित करते हैं तब सब बीमारियां धीरे-धीरे आपके शरीर से निकलने लगती है, आप स्वस्थ होने लगते हैं।

ब्लड प्रेशर की दवा, शुगर की दवा, हार्ट की दवा हम तो देते हैं आप खाते रहते हैं तब तक ठीक रहते हैं। लेकिन एक महीना बंद किया फिर बढ़ने लगता है। तो क्यों न आप कुछ ऐसा तरीक़ा अपनाएं जैसे हमारे ब्रह्माकुमार- ब्रह्माकुमारी बहनें लोग अपनाते हैं। जिसमें शक्ति परमात्मा से मिलती है, उनसे मिलना पड़ता है। तो इसलिए आपको थोड़ा सा सच्ची गीता का ज्ञान लेना पड़ेगा क्योंकि हम शरीर नहीं हैं हम शरीर को चलाने वाली एक चैतन्य शक्ति हैं। चमकीला सितारा हैं जिसे आत्मा कहते हैं। बस इस राजयोग को सीखने के लिए जीवन में कुछ नियम के साथ परमात्मा सुप्रीम सर्जन की शिक्षा को धारण करते हैं। यह परमात्म रूहानी मिलिट्री शिक्षा जितना हम मानते हैं उतना हमारे अंदर की विकार-बुराइयां जो बार-बार बीमारियां पैदा कर रही हैं, इससे छुटकारा मिल सकता है।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 150 रुपए, तीन वर्ष 450 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 October 2022
स्वामी: राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र